लक्ष्यहीन

(कहानी संग्रह)

लेखिका

सन्तोष कौल

Santosh Koul

[जम्मू व काश्मीर की कला, संस्कृति व भाषा-अकादमी द्वारा अनुदान-प्राप्त]
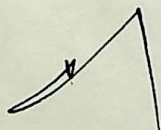
प्रकाशक

कौल प्रकाशन जम्मू

Koul Prakashan Jammu

लक्ष्यहीन

कहानी संग्रह

लेखिका

सन्तोष कौल

प्रथम संस्करण

प्रकाशक

कौल प्रकाशन

विष्णु भवन

जुलाका मुहल्ला जम्मू ।

मुद्रक

मून लाइट प्रेस जम्मू ।

मुख्य पृष्ट

श्री मोहन रेणा ।

मूल्य Rs 2/=
दो रूपये

दिसम्बर 1969

लक्ष्यहीन
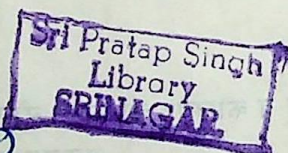
(कहानी संग्रह)

लेखिका

सन्तोष कौल

[जम्मू व काश्मीर की कला, संस्कृति व भाषा-अकादमी द्वारा अनुदान-प्राप्त]

प्रकाशक

कौल प्रकाशन जम्मू

लक्ष्यहीन

कहानी संग्रह
लेखिका
सन्तोष कौल

प्रथम संस्करण
प्रकाशक
कौल प्रकाशन
विष्णु भवन
झुलाका मुहल्ला जम्मू ।
मुद्रक
मून लाइट प्रेस जम्मू ।
मुख्य पृष्ट
श्री मोहन रेणा ।

मूल्य
दो रूपये

दिसम्बर 1969

लेखिका जम्मू व काश्मीर भाषा कला व संस्कृति एकादमी के प्रति उस द्वारा प्रद्धत्त आर्थिक अनुदान के लिये आभारी है। और मुख पृष्ट के लिये पूज्य भाई श्री मोहन रैंणा का धन्यवाद करती है।

★ समर्पण ★

पिता तुल्य लाला मेला राम निजून
जिन की प्रेरणा ने मुझे
इस योग्य बनाया ।

एंव

पूज्य पिता जी श्री अर्जुण नाथ कौल
जिन का असीम प्रेम एंव
पथ प्रर्दशन मेरे लिये
वर्दान है । सादर
और श्रद्धा
भांव से
समिपत।

सन्तोष कौल

लेखिका जम्मू व काश्मोर भाषा कला व संस्कृति एकादमी के प्रति उस द्वारा प्रद्धत्त आर्थिक अनुदान के लिये आभारी है। और मुख पृष्ट के लिये पूज्य भाई श्री मोहन रैंणा का धन्यवाद करती है।

★ समर्पण ★

पिता तुल्य लाला मेला राम निजून
जिन को प्रेरणा ने मुझे
इस योग्य बनाया ।

एंव

पूज्य पिता जी श्री अर्जुण नाथ कौल
जिन का असीम प्रेम एंव
पथ प्रर्दशन मेरे लिये
वर्दान है । सादर
और श्रद्धा
भांव से
सर्मिपत ।

सन्तोष कौल

सूची

❁ भूमिका ❁

(दो शब्द) (प्रस्तावना)

कहानी जीवन का एक खण्ड चित्र है। कहानी में जीवन के किसी एक अंग अथवा किसी एक मनोभाव की झाँकी होती है, किन्तु यह झाँकी क्षणिक होते हुये भी स्वतः पूर्ण, मनोरम व प्रभाव -शाली होती है। मानव जीवन में घटनायें घटित होती रहती हैं। निश्चय ही कुछ घटनायें मनुष्य के हृदय पर अपना स्थायी प्रभाव अंकित करती ही हैं। कहानी के रूप में व्यक्त हो कर ऐसी घट-नायें पाठकों को द्रवित कर देती हैं, उनमें रस संचार करती हैं। साहित्य के अन्य अंगों की अपेक्षा " कहानी " आधुनिक समय में पर्याप्त विकसित हुई है, अधिक लोकप्रिय हुई है। इसके प्रधान कारण हैं, वर्तमान जीवन की विषमताओं से उत्पन्न समयाभाव, मासिक, साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं का प्रचलन, "आकाशवाणी" द्वारा कहानी को प्रोत्साहन आदि।

" आधुनिक कहानी " का विषय मानव जीवन है। प्राचीन कहानियों के समान वह राजा रानी, कौतूहल, चमत्कार आदि का वर्णन न करके, जनसाधारण का जीवन चित्रित करती है। "वर्त-मान कहानी" के पात्र हमारे जीवन के अत्यन्त निकट होते हैं। आज की कहानी पर समाज की नवीन सभ्यता की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। आधुनिक कहानीकार सामाजिक पृष्ठभूमि में व्यक्ति की समस्याओं को देखता है। उसके पात्रों की असफल-

❀ भूमिका ❀

(दो शब्द) (प्रस्तावना)

कहानी जीवन का एक खण्ड चित्र है । कहानी में जीवन के किसी एक अंग अथवा किसी एक मनोभाव की झाँकी होती है, किन्तु यह झाँकी क्षणिक होते हुये भी स्वतः पूर्ण, मनोरम व प्रभाव-शाली होती है । मानव जीवन में घटनायें घटित होती रहती हैं । निश्चय ही कुछ घटनायें मनुष्य के हृदय पर अपना स्थायी प्रभाव अंकित करती ही हैं । कहानी के रूप में व्यक्त हो कर ऐसी घट-नायें पाठकों को द्रवित कर देती हैं, उनमें रस संचार करती हैं । साहित्य के अन्य अंगों की अपेक्षा " कहानी " आधुनिक समय में पर्याप्त विकसित हुई है, अधिक लोकप्रिय हुई है । इसके प्रधान कारण हैं, वर्तमान जीवन की विषमताओं से उत्पन्न समयाभाव, मासिक, साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं का प्रचलन, "आकाशवाणी" द्वारा कहानी को प्रोत्साहन आदि ।

" आधुनिक कहानी " का विषय मानव जीवन है । प्राचीन कहानियों के समान वह राजा रानी, कौतूहल, चमत्कार आदि का वर्णन न करके, जनसाधारण का जीवन चित्रित करती है । "वर्तमान कहानी" के पात्र हमारे जीवन के अत्यन्त निकट होते हैं । आज की कहानी पर समाज की नवीन सभ्यता की छाप स्पष्ट दिखाई देती है । आधुनिक कहानीकार सामाजिक पृष्ठभूमि में व्यक्ति की समस्याओं को देखता है । उसके पात्रों की असफल-

ताओं व कुण्ठाओं के पोछे समाज को विषम परिस्थितियाँ रहतो हैं। गांधोवाद और समाजवाद ने जहां आज के कहानोकार को प्रभावित किया है वहां मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ने मनुष्य के अन्तर्मुखी जीवन के अध्ययन में नये अध्याय जोड़े हैं। कर्म प्ररणायें, कुण्ठायें, वर्जनायें, मन को सूक्ष्मातिसूक्ष्म गतिविधियाँ आज की कहानी में विश्लेषत हो रहो हैं। कहानी के क्षेत्र में नये प्रयोग किये जा रहे हैं। मनुष्य के अन्तर्दन्द्व को गहराई से समझने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान कहानी नये शब्दों के माध्यम से, नये वाक़्यधविधान से, नयी सभ्यता के उपादानों से, बौद्धिकता की पुट लगाकर नये प्रयोग करने के लिये प्रत्यनशोल है।

यह निश्चित है कि कहानो में "प्राण" तभी आते हैं जब कहानोकार को अनुभूति गहरी हो, कल्पना सजीव हो, दृश्यों का सशक्त चित्रण हो, शैली में भाषा के सौष्ठव के साथ संगति और प्रभाव की एकता हो, घटनाओं, भावों, विचारों और कला का समुचित संतुलन हो। सुन्दर शब्द चयन, सुसंगठित वाक्यविन्यास, क्रमबद्ध प्रवाह, भाषा की चित्रोपमता, लक्षणा व व्यंजना का सफल प्रयोग, हासपरिहास का उचित पुट कहानो की शैली को आकर्षक बनाते हैं।

प्रस्तुत कहानी संग्रह सुश्री सन्तोष कौल का प्रशंसनोय प्रयास है। हिन्दी-साहित्य-साधना में निरन्तर प्रयत्नशील सन्तोष जी की कहानियों में जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण पाया जाता है। आशा है कि यह कलिका एक दिन पूर्ण विकसत होकर हिन्दी संसार में उत्कृष्ट साहित्य सौरभ का वितरण करेगी। "कहानी संग्रह" में उर्दू शब्दों की प्रचुरता, भाषा व व्याकरण सम्बन्धी

त्रुटियाँ इत्यादि, अहिन्दी भाषी जम्मू काश्मीर प्रदेश के वातावरण को दृष्टिगत रखते हुये क्षम्य हैं। हिन्दी-साहित्य-सेवा के यज्ञ में इस प्रान्त के तरुण साहित्यकारों द्वारा जो उद्योग किया जा रहा है, उसमें लेखिका द्वारा अर्पित की गई यह कहानी संग्रह की आहुति वस्तुतः प्रशंसनीय है ।

ज॰ प्र॰ द्विवेदी
भूतपूर्व प्राधान
हिन्दी साहित्य मण्डल जम्मू

कुछ शब्द

स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दी साहित्य में जो रचनायें लिखी गई, उनमें एक बात का अनुभव बड़े दिनों से उजागर होता रहा कि जीवन एक नपे तुले फार्मूला के अनुसार व्यतीत नहीं किया जा सकता और न ही उसका वर्णन ही किया जा सकता है, और इस बात का अन्वेशन नित नये प्रयोगों से प्रतीत होता रहा, आज हिन्दी की कहानी मनुष्य की भीतरी व्यवस्था से गुज़र कर उसके बाहयजीवन में घुस गई है। और इस अथाह समुद्र से हिन्दी-साहित्य-कारों ने बहुत से अनमोल और अछूते मोती निकाले हैं। प्रति समय और प्रति पल से बदलती हुई ज़िन्दगी को पकड़ में लाने के लिये आज साहित्यकार के लिये न केवल जीवन का निणय आवश्यक बन गया है बलिक जीवन और मानुष्यि प्रतिमा की पेचदार राहों का अनथक राही बन जाना भी आवश्यक हो गया है यही कारण है कि आज के साहित्य में मनुष्य और उसके समाज के साथ रिश्तों के बारे में जब भी बात का जाती है तो मनुष्य की चेतनता और अबचेतनता के साथ २ ही समाज की चेतनता को भी खोला जाता है।

वास्तव में मनुष्य के बाह्य और भीतरी जीवन में एक शून्य Vaccum, ने जो आज प्रगतिशील और मशीनी दौर पैदा किया है, काफी बढ़ गया है। इस लिये उस समय तक मानव की कोई प्रतिमा चाहे किसी भी दृष्टिकोण से इसका वणन किया जाये, अधूरी रह जाती है। जब तक न इसमें उसकी चेतनत्ता की व्यवस्था को भी शामिल किया जाये।

यही कारण है कि हमें एकाकी मनुष्य की कल्पना मिल गई है। जिन साहित्यकारों ने एकाकी मनुष्य की समस्या को समझा है उसकी भीतरी व्यवस्था से परिचित हैं, वह अधिक तीव्रता के साथ और अधिक सत्य प्रियता की दृष्टि से इस समय का वर्णन कर सकते हैं। यह तो निसन्देह ही मनुष्य के दो व्यक्तित्व हैं। कभी २ यह दोनों व्यक्तित्व एक दूसरे से इतनी दूर होते हैं कि इन में सम्पर्क का कोई पत्तला धागा भी दृष्टिगोचर नहीं होता। ऐसे समय पर मनुष्य और सृष्टि के आपसी सम्पर्क के पीछे बात चला कर प्रतिमा में रंग भरे जा सकते हैं, और यही काम बदलते हुये मूल्यों और विषयों के दृष्टिगत अधिक कठिन और अधिक दुष्वार बन गया है। यही कारण है कि कहानी साहित्य में जितना भी मवाद पढ़ने को मिलता है, उसमें कुछ ही एक कहानियाँ ऐसी मिलती हैं कि जिनको पढ़कर पाठक कुछ क्षणों के लिये आंखे मूंद कर सोचने पर मजबूर हो जाता है। अब समस्या दिल, अनुभव और जज़बात की ही नहीं रही बल्कि इसमें मस्तिषक और चेतनता की पेचीदगियां भी शामिल हो गई हैं।

हमारे साहित्यकारों के समक्ष अब नये अन्तरिक्ष और नये आकाश हैं। अभिव्यक्ति के तरीकों में भी काफी परिवर्तन आये हैं इस लिये आज का साहित्य अधिक आर्कषण और अधिक परिश्रम चाहता है, और जिस साहित्यकार में यह चीज पैदा हो गई वह आजकल के जीवन को पूर्ण रूपमें पकड़ के लाने में सफल होता है।

प्रस्तुत कहानी संग्रह श्रीमती सन्तोषकौल की तरह रोचक कहानियाँ हैं। यह तेरहा कहानियां अपने २ निराले पन से रची गई हैं। बिल्कुल एक माला में पिरोये विभिन्न रंग और रूप के

पुष्पों की तरह । लेखिका ने एक कुशल शिल्पी की तरह जोवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म विचारों को बखूबी लिया है और योग्य चित्रों से चित्रित किया है ।

हरन कहानी की अपनी पृथक भाषा होती है सो इस अन्दाज़ से लेखिका की यह कहानियां भाषा के सुन्दर शब्द विन्यास से पूर्णतया ही सुसज्जित की गई हैं । कहानी जीवन की लम्बी कहानी के कुछ क्षणों का चित्रण है, जिसकी सजीवता ही कहानी लेखन को उभारती है । यह कला सन्तोष जी की कहानियों में मिलती है । इनकी कहानियों के कथानक निरी कपोल-कल्पना नही अपितु जीवन के ठोस सत्य हैं, जिन को लेखिका ने योग्यता के साथ निभाया है ।

"लक्ष्य हीन" में मि० सरवाल और चंचल की कहानी है, जो अन्त तक अलौकिक रूप से निभाई गई है ।

"यादें" लेखिका की स्वतन्त्रता संग्राम की यादें हैं । जहां एक बुढ़िया के पास अपने चार बेटे और एक बेटी का बलिदान दे कर उनकी यादें बचती हैं, और बचती है एक अन्नयाही बहू प्रकृति का व्यंय, और भाग्य का उपहास । यह कहानी उन यादों का मसोदा है, जो हर मनुष्य के मस्तिषक से वास्ता रखती है ।

"परिचय" में लेखिका ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि नारी प्रेम की भूखी होती है । आड़म्बर की या रीति आधि की नहीं । प्रिय के आगे वह कोई भी बलिदान देने के लिये तत्पर रहती है ।

यही कारण है कि हमें एकाकी मनुष्य की कल्पना मिल गई है। जिन साहित्यकारों ने एकाकी मनुष्य की समस्या को समझा है उसकी भीतरी व्यवस्था से परिचित हैं, वह अधिक तीव्रता के साथ और अधिक सत्य प्रियता की दृष्टि से इस समय का वर्णन कर सकते हैं। यह तो निसन्देह ही मनुष्य के दो व्यक्तित्व हैं। कभी २ यह दोनों व्यक्तित्व एक दूसरे से इतनी दूर होते हैं कि इन में सम्पर्क का कोई पत्तला धागा भी दृष्टिगोचर नहीं होता। ऐसे समय पर मनुष्य और सृष्टि के आपसी सम्पर्क के पीछे बात चला कर प्रतिमा में रंग भरे जा सकते हैं, और यही काम बदलते हुये मूल्यों और विषयों के दृष्टिगत अधिक कठिन और अधिक दुष्वार बन गया है। यही कारण है कि कहानी साहित्य में जितना भी मवाद पढ़ने को मिलता है, उसमें कुछ ही एक कहानियाँ ऐसी मिलती हैं कि जिनको पढ़कर पाठक कुछ क्षणों के लिये आंखे मूंद कर सोचने पर मजबूर हो जाता है। अब समस्या दिल, अनुभव और जज़बात को ही नहीं रही बल्कि इसमें मस्तिषक और चेतनता की पेचीदगियां भी शामिल हो गई हैं।

हमारे साहित्यकारों के समक्ष अब नये अन्तरिक्ष और नये आकाश हैं। अभिव्यक्ति के तरीकों में भी काफी परिवर्तन आये हैं इस लिये आज का साहित्य अधिक आर्कषण और अधिक परिश्रम चाहता है, और जिस साहित्यकार में यह चीज पैदा हो गई वह आजकल के जीवन को पूर्ण रूपमें पकड़ के लाने में सफल होता है।

प्रस्तुत कहानी संग्रह श्रीमती सन्तोषकौल की तरह रोचक कहानियाँ हैं। यह तेरहा कहानियां अपने २ निराले पन से रची गई हैं। बिल्कुल एक माला में पिरोये विभिन्न रंग और रूप के

पुष्पों की तरह। लेखिका ने एक कुशल शिल्पी को तरह जोवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म विचारों को बखूबी लिया है और योग्य चित्रों से चित्रित किया है।

हरन कहानी की अपनी पृथक भाषा होती है सो इस अन्दाज़ से लेखिका की यह कहानियां भाषा के सुन्दर शब्द विन्यास से पूर्णतया ही सुसज्जित की गई हैं। कहानी जीवन की लम्बी कहानी के कुछ क्षणों का चित्रण है, जिसकी सजीवता ही कहानी लेखन को उभारती है। यह कला सन्तोष जी की कहानियों में मिलती है। इनकी कहानियों के कथानक निरी कपोल-कल्पना नहो अपितु जीवन के ठोस सत्य हैं, जिन को लेखिका ने योग्यता के साथ निभाया है।

"लक्ष्य हीन" में मि० सरवाल और चंचल की कहानी है, जो अन्त तक अलौकिक रूप से निभाई गई है।

" यादें " लेखिका की स्वतन्त्रता संग्राम की यादें हैं। जहां एक बुढ़िया के पास अपने चार बेटे और एक बेटी का बलिदान दे कर उनको यादें बचती हैं, और बचती है एक अन्नयाही बहू प्रकृति का व्यंय, और भाग्य का उपहास। यह कहानी उन यादों का मसोदा है, जो हर मनुष्य के मस्तिषक से वास्ता रखती है।

" परिचय " में लेखिका ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि नारी प्रेम की भूखी होती है। आड़म्बर की या रीति आधि की नहीं। प्रिय के आगे वह कोई भी बलिदान देने के लिये तत्पर रहती है।

"सिफ एक शर्त पर" या जूठा दूध' दोनों ही कहानियां अपने अपने लक्ष्य तक बड़ी योग्यता के साथ पहुंच गई हैं! और कहानी को लज्ज़त मीठी २ सोच, छौड़ गई हैं। अन्त में हम यही कहेंगे कि लेखिका का यह प्रयास हिन्दी जगत को अवश्य ही लाभान्वित करे गा। मेरी शुभकामनायें लेखिका की सफलता के साथ हैं॥

पुष्कर नाथ
पंजतीरथी जम्मू तवी।

यह बातें, गहराई—
उस सागर की—
जिसका माप
फैदमो से नहीं होता !

INTRODUCTION

पाठकों से !

मानव जीवन स्वंय एक लम्बी कहानी है, और इसी लम्बी कहानी के कई क्षण ऐसे भी गुज़रते हैं, जो केवल मात्र एक स्मृति रह जाती है। उसी स्मृति को यदि कलम की तुलना से तोला जाये तो कहानी बन जाती है। तो ऐसे ही कई क्षणों को कहानी रूप स्मृति प्रस्तुत है, मुझे आशा है कि पाठक जन इन्हें पसन्द ही करें गे।

लेखिका

❖ जूठा दूध ❖

"क्या आपने हलवाई से दूध के लिये पूछा था भला ?"

"हां भई ! पर वह तो कहता है कि अपने ही वक्त पर देगा, न उस से पहले ही न उस से बाद ही।"

"ऐसा क्यों ?"

"क्यों कि गर्मी के दिन जो रहे, इस लिये वह मंगवाता ही उतना है जितना उसका खर्च हो, इस लिये क्यों या क्या की गुंज्जाइश ही नहीं।"

"लेकिन आज तो हमें दूध की काफी ज़रूरत पड़ेगी। अगर मिला नहीं तो क्या होगा ?"

"कोई बात नहीं इकट्ठा करने की कोशिशि करें गे। अभी कौन सा यज्ञ तुमने करना है टाइम तो चार को है तो तब तक काफी दूध का इन्तिज़ाम हो सकता है !"

पति के शब्द सुन कर श्रीमति जी को थोड़ी तसल्ली हुई और वह अन्य कार्यों में लग गई। थोड़ा दिन बीत जाने पर उन्हें फिर से फिकर सताने लगी और भागी-भागी फिर पति के कमरे में आई और बोली-चाय का वक्त होने को आ गया पर अभी, दूध का कोई इन्तिज़ाम नहीं हुआ। बाहर से लोग चाय पीने आये तो उन्हीं के सामने लाते अच्छे लगोगे क्या ?"

"यह तो सब ही जानते हैं कि ऐसी चीजें घर की दीवारों से नहीं बल्कि बाज़ारों से ही आती हैं तो भला इसमें झेंप कैसी। वैसे तुम कहती हो तो लो अभी इन्तिज़ाम किये देता हूं। कितना लाऊं ?"

"चार किलो"

"अच्छा सरकार"। कहकर पति महाशय बाज़ार चले। बड़ी देर तक वे लौटे नहीं, उधर से मेहमान लोग आये। ताश चली गप्पे होने लगी। जब वे लौटे तो चार बज चुके थे उन्होंने चार किलो दूध और साथ में खाने के लिये कुछ मिठाई लाई थी। वे अभी घर के अन्दर आये तो बीबी गरज पडी, उन पर।

"कहां थे आप अब तक ? अच्छा इन्तज़ाम करवाया आपने। लाईये इधर रखिये। उन्होंने दूध को बाल्टी एक ओर रख दी और श्रीमती जी उनको ले चली अपनी सहेलियों से मिलाने-"यह हैं मिसिज़ खन्ना, और यह हैं हमारे हसबैण्ड जी"

और पति जी नमस्कार करते हुये आगे बढते ! इसी तरह परिचय करवाते-करवाते एक सुन्दर सी महिला के सामने, जो काफी सादी होने के बावजूद भी बहुत ही आर्कषक लग रही थी श्रीमती जी रुक पडी-और यह है" आप की बेटी की सहेला "रमा"! आज कल उसी के कालेज में पढ़ाती है।

पति महाशय मन्त्र मुग्ध से होकर नमस्ते करना जैसे भूल ही गये, प्रस्तर प्रतिमा के समान खड़े रहे। कुछ देर बाद अपने को कुछ नियन्त्रित से करते हुये वे बोले।

"क्या आप हमारी बेटी को पढ़ाती हैं ?"

"जो"

"अरे आप भी तो अभी छोटी हैं"

तो भला ये लडकियां आपका क्या रोब मानती होंगी।

उत्तर में रमा थोडो मुस्कराई। इस पर थोडा और अकिपक ढंग से वे बोले—

आज कल तो इसी लिये Educational institutes में Indiscipline, होता है क्योंकि कम उमर और कमसिन लोग थोडे ही गुरू बन सकते हैं। सच बताना रमा जी आप का इन शिष्यों पर थोडा भी सही रोब तो है ना ?

"वह तो गुप्ता साहब ! अपनी योग्यता पर Depend करता है उसमें Teacher की Personality का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"ठीक है। अभी तो आप ज़िन्दगी के इस ओर ही हैं ना जब शादी की Certificate मिलेगी तब योग्यता परखी जायेगी

जवाब में रमा ने कहा तो कुछ नहीं पर एक ठन्डी सांस लेकर रह गई इतने में श्रीमती गुप्ता लाचार सी सूरत लेकर गुप्ता जी के पास आकर बोली—कुछ करो बिल्ली सारा दूध जूठा कर गई और चाय के किये कुछ नहीं है। अब क्या करें।

गुप्ता जो पसोपेश में पड गये और बोले "अब इस Time दूध मिलना तो दूर रहा इसलिये हो सके तो इसी तरह काम चलाओ।"

"क्या करूं ! बिल्ली को तो करीब सभी लोगों ने दूध जूठा करते हुये देखा है। अब इस्तेमाल करूं तो किस तरह।

गुप्ता जी टण्डी सांस लेकर रमा की ओर मुंह करके बोले --देखिये ईश्वर की करनी ! मैं तो आज पहली दफा बढ़िया दूध लाया था। अब चाहे वह लाख अच्छा क्यों न हो हम इस्तेमाल तो नहीं कर सकते ! यह तो होते हुये भी नहीं होने वाली बात हुई खैर। अब यह खुद ही कुछ इन्तिज़ाम करें गी। हाँ आप बताइये आप तो कुछ कहने जा रही थी। इतना कहते हुये गुप्ता जी रमा की ओर देखने लगे रमा न जाने किस लोक में खो गई थी। गुप्ता जी के इस तरह देखने से वह कुछ सहम सी गई।

"जी आप मुझ से कह रहे हैं, नहीं तो"

"अब मैं आप को कैसे याद दिला दूं कि मैं आप से ही कुछ पूछ रहा था, मिस रमा।"

और रमा अपने लिये मिस शब्द अनायास ही नहीं झेल सकी। उसकी आंखों में आंसू आये और आकर वहीं आंखों की कोरों में समा गये। वह कुछ भी शब्द झुटा न सकी, चुप बैठी रही और गुप्ता जी उसके आकिषक सौन्दर्य को निहारते रहे। इतने में श्रीमती जी ने वह दूध की बाल्टी सामने लाते हुये कहा - वैसे तो क्या पता यह हलवाई वगैरा भी लोगों को ऐसा ही जूठा दूध देते होंगे। क्योंकि दूध देखते ही मन लुभा जाता है पर आंख देखी मक्खी तो निगली नहीं जा सकती। इधर से मन तो नहीं करता कि छोड दूं पर इस्तेमाल भी कैसे करूं यह जो बिल्ली का

जूठा है क्यों रमा जी ? श्रीमती जी ने रमा की ओर नज़र उठाई तो एक बार ही आश्चर्य में पड गई, उसने देखा कि वह दूध की भरी बाल्टी में नज़रें गढ़ाए अविरल आंसुओं की धारा बहाये जा रही थी बिना किसी लाज या शरम के। उसके होंठ कांप रहे थे, और सांसें बड़ी ज़ोर से चल रही थीं। गुप्ता जी उसके अन्दर के हालात से वाकिफ तो थे नहीं। उन्होंने समझा कि यह लड़की इतनी नादान है कि दूध के ज़ाया होने से इसको सख्त तकलीफ लग गई. बोले-अरे रमा जो जाने भी दीजिये इतनी सी बात को आप अगर इतनी अहमियत देंगे तब तो हो गया काम। ज़िन्दगी इतनी सीमित और संकुचित नहीं गृहस्थ में ऐसी बातें तो हुआ ही करती हैं खैर आप से क्या कहना जब गृहस्थ में पड जायें गी तो खुद पता चल जाये गा।

अभी तो............

बस कीजिये प्लीज़ में ....

मैं अब कुछ नहीं सुन सकती ... .

अरे क्यों, अगर इतनी सी बात को लेकर आप काम करें गी ज़िन्दगी में तो मेरे ख्याल से आप कामयाब नही रह सकती

यही तो ....

यही तो रोना है गुप्ता साहिब। जो मैं हूं उसे आप पहचान नहीं पा रहे। मैं आपको कैसे समझाऊँ।

" मतलब "

आप मुझे लड़की समझते हैं untouched और virgin ! यही ना ! पर मैं वह सब नही हूं। मैं निराधार और बे मतलब सी एक ज़िन्दगी हुं जो सुन्दर लगते भी सुन्दर नही। मेरी ज़िन्दगी भी इसी जूठे दूध की तरह लुटी हुई है।

" क्या मतलब मे कुछ समझा नहीं,"

तो सुन लीजिए मैं लड़की नही त्यक्ता हूं। त्यक्ता त्याग की हुई औरत, अब तो आप समझ गये होंगे। "

थोड़ी देर गुप्ता जी को जैसे कुछ भी समझ नही आई हो, ऐसे गुमसुम रहे फिर बोले, " अगर आपको कुछ हर्ज़ न हो, तो बताइये यह सब कैसे हुआ ? "

मैं अपने माँ बाप की इकलौती लड़की थी, सो बहुत लाड प्यार में पली थी जब थोड़ी बड़ी हुई तो मेरी शादी कर दी गई। साल भर मैं अपने घर ठीक ढंग से रही। फिर न जाने एकाएक क्या हो गया कि मेरे husband को मुझ से नफरत होने लगी, ऐसा क्या हुआ, मुझे कुछ नहीं मालूम और फिर एक दिन ऐसा भी आया जब उन्होंने पीट कर बेरहमी से घर से बाहिर कर दिया। तब से मैंने थोड़ा ओर पढ़ के नौकरी शुरू की और अब तक उसी जूठे दूध की ज़िन्दगी निभाती आ रही हूं।

पर इस तरह कब तक चले गा तुम सुन्दर हो जवान हो पढ़ी लिखी और समझदार भी कैसे चलाओ गी अपनी ज़िन्दगी को यह तो न मुमकिन बात है।

" तो बताइये ना मैं क्या करूँ। "

" तुम ज़िन्दगी में फिर से stand करने को try कर लो

जूठा है क्यों रमा जी ? श्रीमती जी ने रमा की ओर नज़र उठाई तो एक बार ही आश्चर्य में पड गई, उसने देखा कि वह दूध की भरी बाल्टी में नज़रें गढ़ाए अविरल आंसुओं की धारा बहाये जा रही थी बिना किसी लाज या शरम के। उसके होंठ कांप रहे थे, और सांसें बड़ी ज़ोर से चल रही थीं। गुप्ता जी उसके अन्दर के हालात से वाकिफ तो थे नहीं। उन्होंने समझा कि यह लडकी इतनी नादान है कि दूध के ज़ाया होने से इसको सख्त तकलीफ लग गई. बोले-अरे रमा जी जाने भी दीजिये इतनी सी बात को आप अगर इतनी अहमियत देंगे तब तो हो गया काम। ज़िन्दगी इतनी सीमित और संकुचित नहीं गृहस्थ में ऐसी बातें तो हुआ ही करती हैं खैर आप से क्या कहना जब गृहस्थ में पड जायें गी तो खुद पता चल जाये गा।

अभी तो..........

बस कीजिये प्लीज़ में ....

मैं अब कुछ नहीं सुन सकती ... .

अरे क्यों, अगर इतनी सी बात को लेकर आप काम करें गी ज़िन्दगी में तो मेरे ख्याल से आप कामयाब नही रह सकती

यही तो ....

यही तो रोना है गुप्ता साहिब। जो मैं हूं उसे आप पहचान नहीं पा रहे। मैं आपको कैसे समझाऊँ।

" मतलब "

आप मुझे लड़की समझते हैं untouched और virgin ! यही ना ! पर मैं वह सब नही हूं । मैं निराधार और बे मतलब सी एक ज़िन्दगी हुं जो सुन्दर लगते भी सुन्दर नही । मेरी ज़िन्दगी भी इसी जूठे दूध की तरह लुटी हुई है ।

" क्या मतलब मे कुछ समझा नहीं,"

तो सुन लीजिए मैं लड़की नही त्यक्ता हूं । त्यक्ता त्याग की हुई औरत, अब तो आप समझ गये होंगे । "

थोड़ी देर गुप्ता जी को जैसे कुछ भी समझ नही आई हो, ऐसे गुमसुम रहे फिर बोले, " अगर आपको कुछ हर्ज़ न हो, तो बताइये यह सब कैसे हुआ ? "

मैं अपने माँ बाप की इकलौती लड़की थी, सो बहुत लाड प्यार में पली थी जब थोड़ी बड़ी हुई तो मेरी शादी कर दी गई । साल भर मैं अपने घर ठीक ढंग से रही । फिर न जाने एकाएक क्या हो गया कि मेरे husband को मुझ से नफरत होने लगी, ऐसा क्या हुआ, मुझे कुछ नहीं मालूम और फिर एक दिन ऐसा भी आया जब उन्होंने पीट कर बेरहमी से घर से बाहिर कर दिया । तब से मैंने थोड़ा ओर पढ़ के नौकरी शुरू की और अब तक उसी जूठे दूध की ज़िन्दगी निभाती आ रही हूं ।

पर इस तरह कब तक चले गा तुम सुन्दर हो जवान हो पढ़ी लिखी और समझदार भी कैसे चलाओ गी अपनी ज़िन्दगी को यह तो न मुमकिन बात है ।

" तो बताइये ना मैं क्या करूँ । "

" तुम ज़िन्दगी में फिर से stand करने को try कर लो

ओर बहुत हद तक यह मुमकिन है कि तुम्हारी ज़िन्दगी बन जायेगी।

" परन्तु गुप्ता साहिब जिन लोगों ने बिल्ली को यह दूध जूठा करते देखा है, क्या वह ऐतराज़ नहीं करेंगे "

" उसका यह तो मतलब नही कि हम ज़िन्दगी दे बैठें लोगों के लिये। "

" Sacrifice करनी पड़ती है। "

" क्यों भला "

क्योंकि हमारे समाज़ का यही उच्च सिदान्त है।

" क्या "

" यही कि अगर पर्दे के पोछे या रात की सियाही में पाप कर भी लें तो कोई देखता नहो पर दिन के उजाले में पकड़े जाओगे तो पापी कहलाओगे और बदनाम हो जाओगे जैसे हलवाई लोग जूठा दूध भी वेच सकते हैं और हम खुशी से ले भी लेते हैं पर इस तरह का जूठा दूध व्यर्थ है और बेकार की चीज़ है "

" पर यह सब ठकोसला है धोखा है और फरेब है। "

चाहे जो भी हो हमारे अलमवरदारों ने समाज के ठेकेदारों ने एक बालबिधवा को देवदासी बनाकर व्योभचार करने केलिये मलनर किया है, परन्तु निभय होकर समाज के सम्मान का हक नही दिया है।

"एसा क्यों'

"क्योंकि उनकी अपनी तृष्णा का सवाल है गुप्ता साहब— किसी का गम देखकर हाय करना आसान है पर उस गम को मिटाने के लिये अपनी खुशी को सर्वथा त्याग करना पड़ता है। नशा पिला कर दुःखी कों तो हम बेहोश कर सकते हैं पर नशे की हालत में होश में लाना हमारी समाज के हाथ नहीं।

"मैं तुम्हारी ज़िन्दगी को सुधारने को सतत कोशिश करूं गा।"

"वह कैसे ?"

"तुम्हारी नई शादी करवाके।"

"पर गुप्ता साहब ! एक दफा आग से खेल कर अपना आशियां जला कर देख लिया अब बाकी क्या रहा है जो में किस्मत आजमाई करूं।"

"नादान लड़की तेरी मासूम सी सुन्दर सी ज़िन्दगी"

"यह तो टूटा हुआ घडा है इसमें पानी नहीं रह सकता और यह जूठा दूघ है जिसे कोई पीने को तैयार नहीं।"

रमा की बात गुप्ता साहब को न जाने क्या असर कर गई वे उठ कर रमा के सिर पर हाथ रख कर बोले।

"कोई नहीं तैय्यार होता तो तुम्हें मैं अपना लूंगा।"

तभी क्षितिज में चांद का भोला सा मुखड़ा निखर पड़ा।

परिचय

बहुत दिनों के बाद आज कालेज में बाहिर के कवियों की सभा हो रही है, इतना शोभा को पता लग चुका था, इसलिये वह खुशी से फूले नहीं समाती थी। ना जाने उसे शायरी और शायरों से अजीब सा लगाव क्यों था! जब भी कभी रेड़ियों पर मुशायरा होता तो वह अपनी सुध - बुध खोकर घण्टों बैठी रहती और सुनती रहती; भावना लोक की दलीलें। उस पर तो आज उसके अपने ही कालेज में यह मुशायरा होने वाला था। वह जल्दी से उठी और अपने नित्यकर्म से निवृत हो कर, रोज़ से कोई आधा घन्टा पहले ही बस-स्टाप की ओर चल पड़ी। पर कमबख्त बस तो अपने ही टायम पर आई, उसे तो न शायरी का शौक था और न शोभा का विचार। ... .

बस आ गई तो एकदम फुल। किसमत भी कितनी अजीब कि उसको स्टैंड़िग में ड़न्ड़ा पकड़ना पड़ा। इस तरह तो और भी कई सवार थे बस पर! किसी ने बस का Stand पकड़ा था तो कोई सीट के पिछले भाग पकड़े था। ऐसे ही बस अपनी चाल चल रही थी और वह अपनी ही मस्ती में सोचती चली जा रही थी।...........

"ज़मीन पर हैं पाऊं मगर उंगलियों से... ....

सितारों को भी छेड़ता जा रहा हूं"। इतने में बस रुक

गई नीचे स्टाप से कई चड़े भी, और बस से कई उतरे भी; इसी तरह एक सज्जन शोभा के ठीक पीछे ड़न्डा पकड़े खड़े हो गये। वह पूरी तरह अपने को सम्भाल भी न पाये थे कि कन्डक्टर ने सीटी बजादी और बस चल पड़ी ! और वह सज्जन शोभा पर पूरी तरह से गिर पड़े। शोभा इतने लोगों के सामने एक युवक के नीचे आने से तो एक बारगी ही शर्माई पर घुस्से को भी किसी तरह निगल न सकी बोली—Fool you are ? क्या दिखाई नहीं देता सामने कौन खड़ा है ? ओर तुम्हें कैसे बस में सफर करना चाहिये जंगली कहीं के। और भी ना जाने क्या-क्या शोभा घुस्से में हांपती हुई बोली ! पर वह युवक वेचारा एक दम मायूस सा हो गया। कुछ शब्द भी न जुटा सका कि क्या बोले ? सिर नीचे किये वह शाँति से सब कुछ सुनता रहा। कई सवारियाँ बस में बैठे-बैठे ही चिल्ला पड़ी,"नीचे उतार दो साले को ! पर उस गाली पर भी उस शांति, स्थिर और गम्भीर युवक ने कोई प्रतिकार नहीं किया। सिफ पतलून की जेब से टिकट निकाल कर हाथ मैं थामे वह चोर दृष्टि से जैसे कभी ड्राइवर और कभी कन्डक्टर की और बारी-बारी देखने लगा।..........

अब बस में एक और सज्जन उठे जिनके वेश से लगता था कि किसी रईस के साले होंगे, बोले, "यह हरामजादे तो ऐसे ही बेगुनाह बन कर व्यबिचार करते हैं; और बदनाम होते हैं, हम जैसे शरीफ लोग ! जहां पर भी किसी सुन्दर सी लडकी को देखा तो पागलों को तरह झपट पड़े बेमतलब और बेढ़ंगी से।" शोभा को अपनी सुन्दरता की चर्चा सुनकर थोड़ी शर्म सी अनुभव हुई उसने अपनी ओर ही निहारा तो उसने बाजू को, जो ड़न्ड़ा पकड़

था, एकदम नोचे उतारा। शायद इसलिये कि उस ने बिना बाज़ू के ब्लौज़ पहना था ! तब उस सज्जन ने अपनी सोट खाली करके शोभा की ओर सम्मानित दृष्टि से देख कर कहा—"बैठ जाइए मिस ! और शोभा बैठ गई। अपमानित युवक अभी शांत भाव वहीं डन्डा पकड़े खड़ा था ! ज्यों ही शोभा बैठ गई उसकी नज़रें अनायास ही युवक की नज़रों से टक्कराई !...........

शोभा को उसकी बेबसी व बेकसी से मजबूर सूरत कुछ आर्कषक सी लगी। सूखे बाल सुन्दर किन्तु मायूस चेहरा और दुनिया के तानों और गालियों से सर्वथा दूर दो आंखें जिन्होंने कभी झुकना नहीं जाना था। आगे बज़ीर नगर का स्टाप आ गया और वह उतर पड़ा।

बस आगे चल पड़ी और साथ ही शोभा की विचार धारा भी। न जाने उसे अपने कहे शब्द क्यों बुरे महसूस हो रहे थे; और इस अनजान युवक के प्रति कौतूहल ! बड़ी देर तक सोचती रही कि मैंने उसका अपमान क्यों किया। यह तो आकस्मिक घटना थी; उसमें उसका क्या दौष ? इतने लोगों के कहने-सुनने पर भी वह एक शब्द भी न बोला ! केवल सिर झुकाया आखिर क्यों ? क्या उसने कुछ भी न कहा ? क्या वह सच्ची ही दोषीं था ? .... कितना गम्भीर था वह पुरुष ! कितना आर्कषण था उसकी आंखों में। ....दो सज्जन बातें कर रहे थे,"हाँ जी ! भारत में आजकल जों Population बढ़ गई है, तो शिक्षा हो तो कहां से ?"

दूसरे सज्जन बोले :-"कारण क्या है ? जनसंख्या शिक्षा में बादक क्यों ?"

पहले सज्जन बोले, " देखो ना ! एक तो जनसंख्या बढ़ गई उसके साथ हो फैशन परस्ती और महगाई अपने विकराल झबड़ों से बेचारे गरीब का गला घोंट दिया है। अभी इसी नौजवान को ले लो ! फैशन केलिए इन देवो जी से टक्कराया पर ! अपनी गरीबी के कारण कोई प्रीतकार नहीं कर सका। कितनी उल्झन भरी है यह फैशन परस्तो भी........... !

उनकी यह बात-चीत तो वैसे शोभा की समझ में तो नहीं आई परन्तु उसी युवक का नाम सुनकर जैसे फिर चौंक पड़ी ! सोचने लगी...... " क्या वह गरीब था ? फिर तो उसे उसको अपमानित करने का कोई हक नही था। क्योंकि वह भी तो स्वंय उसी जैसी गरीव है। यदि वह उसे उस वक्त माफ भी कर देती तो कितना अच्छा होता पर ! उसने .....उसने उस पर .... उसको बेबसी पर दावा बोल दिया। क्यों ? आखिर क्यों ? क्या गरीब लताड़ने और बे इज्ज़त ही होने केलिए धरतो पर आया है। पर यह धौंस किस पर जताये क्योंकि गलती उसकी अपनी है.....

बस रुक गई और शोभा का ध्यान भंग हो गया। बह उठी और किताबें सम्हालकर नोचे आ गई। थोड़ी दूर चलने के बाद उसका कालेज आ गया। लाईन में सभी विद्यार्थियों को तितर-बितर पाया कारण पूछने पर मालूम हुआ कि प्रो० सिह क्लास नही लेंगे। क्योंकि वे भी हो रहे कवि सम्मेलन में भाग लेंगे। ऐसी बात सुनकर उसकी चेतना लौट आई। वह भी हाल को ओर चल

पड़ी और अन्दर आते ही वह जैसे सतम्बित सी खड़ी रही ......

मंच पर वही युवक खड़ा माइक पर अपनी कविता सुना रहा था ....

" मेरे भगवान् ! यह कैसा संयोग ! मैंने आज एक कलाकार का अपमान किया है। क्यों ? खैर .... वह बैठ गई और ध्यान से सुनने लगी। कवि कह रहा था :-

"स्वर्थि ने पसारा हाथ ....

और शान्ति...........

छिप गई

वख्त के बेनूर पर्दे में "

कविता और भी बहुत लम्बी थी, पर शोभा का ध्यान इन्हीं चार पंतियों में बटक गया। कवि ने कविता समाप्त की और निमन्त्रित कवियों में जाकर अपनी जगह पर बैठ गया। अब मन्त्री महोदय माइक पर आये और बोले ... ... " अभी आप दिल्ली के प्रसिद्ध कवि श्री भाँगव से उनकी कविता सुन रहे थे

शोभा ने वैसे पहले भी " भर्गव की कवितायें पढ़ी थीं। परन्तु उसका विचार बिल्कुल भिन्न था भर्गव के प्रति ! वह सोचा करती :— भर्गव कवि तो बिल्कुल बूढ़ा। और रूदिग्रस्त होगा, जिसका मुंह समय की वेमुरोवत लकीरों से सम्पूर्ण ही भरा हुआ होगा। उसको कविताओं से यही ज्ञात होता है कि इसकी अनुभव

शक्ति बहुत ही जींण होगी। सारांश यह कि यह कवि तो बूढा और स्त्रोहीन होगा। क्योंकि इसकी कवितायें बिल्कुल स्वतन्त्र हैं। इसकी भावनायें क्रान्ति पूर्ण और बेधड़क हैं .... और इसी कल्पना के सहारे 'भागिव' शोभा का सर्वप्रिय कवि था ही परन्तु इतना आंकषक नहीं, जितना कि उसने प्रत्यक्ष्य में उसने देख लिया उसकी कल्पना तक में यह नही आया था अब तक कि एक नवयुवक कवि श्रृङ्गार को किनारे रखकर जीवन ओर इसके कठिन सम्यों को तोले और बोले !

जब पहली भेंट हुई तों यही युवक एक बदमाश प्रतीत हुआ और जब सम्मेलन में आई तो यही उसका चिर परिचित और सर्व प्रिय कवि सिद्ध हुआ। वह निणय ही नही कर सकी कि इस नव सिंचित हृदय में इतनी गम्भीर भावना क्यों कर समाई हुई है। उसकी कविता निरो तुकबन्दी या छायावाद-रहस्यवाद की घिन नहो बल्कि जीवन को सरल भाषा में परिभाषा है। कितना उपयुक्त है यह कवि आधुनिक युगोय जीवन के लिये। वह सोचती जा रही थी इतनी देर में कई कवि आये और अपना सुना कर बैठ भी गये पर ! उसे कुछ पता नहो। वह जो खोई थी अपने ही विचारों के ताने-बाने में। काफी वक्त बीत जाने पर जब सभा बिसजिन की गई तो कई त्रिद्यार्थी कवियों से हस्ताक्षर लेने लपके तो उसे भी विचार आया कि क्यों न वह भी 'भीगव' कवि से हस्ताक्षर ले ले...

वह भी हस्ताक्षर लेने गई। कवि मौन कितनी देर तक उसे निहारता रहा। बहुत पूछने पर उसने हस्ताक्षर करते हुये केवल इतना कहा—"यह मेरे साइन रहे।"

पर शोभा को तसल्ली नहीं हुई वह बोली—यदि बुरा न हो तो कृपया अपना थोडा सा परिचय दीजिये ।"

इस पर कवि ने बड़ी मुशिकिल से अपने को रोका और बोला—क्या कीजिये गा मेरा परिचय लेकर बिना नाविक के नाव संसार की उताल तरंङ्गों पर ।"

"फिर भी बताइये ना प्लीज़ ।" शोभा ने बच्चों की तरह हठ किया । तो कवि बोला—"फसादात में मैं अपने माँ बाप और एक छोटी बहन से बिछड़ गया ! तब से गो बहुत समय हुआ पर ! अभी तक मुझे वे लोग मिले नहीं ! लाहौर से आये शरणार्थियों में आकर मैंने उन्हें डूढ़ने की काफी कोशिश की परन्तु सब बेकार ! अब जिये जा रहे हैं बेलूस ज़िन्दगी ।"

शोभा को यह बात सुन कर अपने वह दिन याद आये जब वह भी शरणार्थी बन कर दिल्ली आये थे । उसकी सुन्दर सी आंखों मैं दो बड़े आंसू मोतो बनकर लुढ़कने को हो गये ! किसे ना अपनी मातृभू का प्यार हो ! उसने बड़ी मुशिकिल से अपने को सम्भाला और कवि से बोली—वैसे आप लाहौर में कहां रहते थे ?

कवि—"रेडियो सिटेशन के सामने ।"

शोभा—"क्या नाम था आपके पिता जी का ?"

कवि—"पं० उमाशंङ्कर त्रिपाठी ! मेरी छोटी सी बहन भी थी जिसका नाम शोभा था ....

इतना ही कहना था कि शोभा गला फाड कर चीख पड़ी............भैय्या ....

❀ यादें ❀

विचित्र सा सगम हो रहा था उसकी रोती आँखों और हंसते होठों का छत की छोटी सी दिवारों पर दिये जलाकर वह रखती जाती थी। सारा वातावरन मनोरम सा बन गया था।

रात की रानी की खशबू के साथ साथ दीवों के जलनें से रोशनी जो हुई थी लगता यों था जैसे रोशनी ने रात की सियाही को करीब पोछे ही डाला हो। हर ओर सुन्दरता ही सुन्दरता दिखाई देने लगी। माँ की इन झुरियों में न जाने कितनी घटनाऐं छिपी हैं। इतिहास की किस युग से लेकर और न जाने कहां तक उसकी यह आंखे साक्षी हैं। वह दिये जला रही है, चारों ओर प्रकाश हो रहा है, देदाप्यामान रोशनी आज पन्द्राह अगस्त है, आज के दिन केलिये ही उसने सालभर साध बना रखा होता है। भारताय स्वतन्त्रा की पुजारिन यह बुड़िया इस स्वतन्त्रा दिवस को मनाती रहती हैं पिछले 20 वर्ष से भारत स्वतन्त्र हुआ है। इसका देश आज स्वतन्त्र है और प्रगति के पथ पर अग्रसर है, माँ के मन में इस बात की बहुत ही खुशी है, पर आज के दिन वह अकेली है, नितान्त अकेली यार की बेटों की मां ....

आज इस स्वतन्त्रता दिवस पर दिये जला रही है .... यह वही माँ है जिसने देश की स्वतन्त्रता की अग्नि में अपने चारों लालों की आहुति दी है, शायद इसीलिये उसकी वृद्ध आंखें रो रही हैं। कौन जाने... ....

कहा जाता है कि संसार की प्रत्येक वस्तु नश्वर हैं जो पैदा होता है उसने निश्चय ही मृत्यु भी प्राप्त करनो होती है। इसलिए मरे हुए पर आँसू नहीं बहाते वृद्धा ने सहसा अपने आंसू पोंछ लिए कांपते हाथों से। पर यादें! हां स्मृति इसका अन्त तो नहीं होता उसकी आंखों के आगे एक-एक करके वे सभी त्रंग घूमते हैं............

जब उसका दीनू रणभूमि में गया था यह कहते हुये—"मां अंग्रेज़ों ने हम पर ज़ुल्मों की तो हद ही करदी। हमारा गिरोह अब बहुत ही चौकन्ना तथा सबल हैं हमारे नेता भगतसिह है। तुम फिक्र न करो मां! देखना हम भारत मां को अवश्य ही स्वतन्त्र कर देंगे।"............

वह लौट के फिर नहीं आया बल्कि उसकी असमय मृत्यु का समाचार ही आया—बहादुर सिपाही जो हारकर वापिस नहीं आते।.... मां ने उसके मरने की खबर सुनी, ममता तड़प उठी। हृदय हाहाकार कर उठा...पर! जो मरते हैं उन्हें ज़िन्दा भी कैसे किया जाये। छिः उस जैसी भारतीय नारी को अपनी एक सन्तान केलिये रोना अच्छा नही लगता जबकि वह भारत माँ की हज़ारों लाखों सन्तानों की मुक्ति केलिए लीन हो गई हो, अन्त में...

दो मोटी मोटी आँसु की बूंदे लुटक पढ़ी वृद्धा के जीर्ण से चहेरे पर, एक ठन्डी सी सांस लेकर वह आगे वढ़ी, उसने नीचे झांक कर देखा— बच्चे पटाखे चलाने में व्यस्त थे, गृहणियां घरों के गोरखधन्धों में। माँ को लगा कि यह सब कुछ मिलाकर एक मिला-जुला समूह मात्र सा है केवल अपने में ही खोया हुआ। अपना निजीवन खोकर कुछ विचित्र और अस्त-व्यस्त सा..........

उसे याद आई कमो......और उसकी भोली सी बातें . "मां भैय्या को तंग न करो शादी के लिये वह तो मोर्चे पर जा रहा है और फिर उस ने तो अपनी मगेतर को भी शादी न करने पर तैय्यार किया है अब तुम ही फज़ूल में क्यों रोड़ा अटकाती हो।"

मां ने सुना और कड़क कर जवाब दिया था..... "चुप रह री छोकरी! एक तो गया अब इसका वहां जाकर क्या मिले गा? युगों से पली पराधीनता क्या वह मिटा पायेगा। उसकी उमर हो गई है उसकी शादी करूं गी बहु आये गी और अपने आप विचार बदल जायें गे इसके।" "नहीं माँ आज अगर हरेक युवक देश की रक्षा के बदले अपनी शादी का भी विचार लाये तो लानत है उस पर।"

" चुप रह री छोकरो; चार अक्षर क्या पढ़ी है बल्कि आफत आई है तुम पर।"

"मां अभी भी समय है सम्भल जा। तुम्हारी भारत मां के हृदय में धू-धू करती परतन्त्रता की अग्नि नल रही है, और उसी के कई बेटे उसी अग्नि में होम हो रहे हैं, तो तुम शादी रचा ओ गी आश्चर्य है मां तुम पर आश्चर्य है।"

तड़ाक्—माँ ने कमो के पीले से कोमल चेहरे पर थपड़ मारा था - वृद्धा के हाथों से थालो गिर गई और बूढ़ी आंखों में सावन-भादों की झडी लग गई। —इसकी कमो इसी आवेश में आकर नारी दल में शामिल हुई थी, और स्वरूप नारी दल में उसकी समाप्ति भी हुई थो - उफ। बुड़िया सिर थामे बैठ गई।

उसे वह शाम भी याद आई जब उसके दूसरे बेटे शामू ने उसे कहा था—"मां ! मैं जा रहा हूं।"

"किधर बेटे ?"

"ज़हां दीनू भैय्या और कमो गई है।"

"नहीं मेरे लाल ऐसा नहीं हो सकता में जाने नही दूगी।"

"मुझे रोकने से भारत की इतनी जनता नहीं रुके गो माँ और यदि हम ज़िन्दा हो रहे तौ अंग्रेज़ों की गुलामी और अपनी बेइज्ज़ती के सिवा क्या मिलेगा ? तुम तो क्षत्राणी हो तुम्हें ऐसा सोचना शोभा नहीं देता मुझे आज्ञा दो। देर हो रही है।"

तब वह उठी थी और ठाकुर जी के चरणों की भस्म शामू के माथे लगाकर शामू को पुन्यकार्य हेतु भेजा था। शामू गया तो सही पर लौट कर वह आया नहीं ! ——मां रोते-रोते थक गई, आंखों के आंसू तक सूख गये पर उसका भारत आज़ाद न हुआ। कई साल भीत गये कई घटनायें घटीं ! मां को इन अनुभवी आंखों ने कई माताओं के लालों को जाते देख कर लोट के वापिस कभी आते नहीं देखा था। उस की अभिलाशा को तनिक तसल्ली हुई कि शायद बलिवेदी अभी कुछ और चाहती है।......

उसका सबसे छोटा बेटा मुरली भी इसी होम में स्वाहा हो गया ! उसकी भी बात याद आई .."माँ अबकी देखना आज़ादी हमारे पांऊं चूमेगी।" पर ! उस समय माँ ने उसको रोका नहीं जाने दिया था—शायद वह अब खुद समझने लगी थी कि आज़ादी

की कीमत वातसल्य का गला, घोंट कर देनी ही होगी। मुरली गया और भारत को स्वतन्त्रता मिलने की उम्मीदें छोड़ कर।

कुछ समय पश्चात सत्य में हो भारत को स्वतन्त्रता सुनने में आई अंग्रेज़ों ने शासन की बागड़ोर को छोड़कर भारतीयों को थमा दी परन्तु एक आग थी भाई को भाई से शत्रुता। अखन्ड भारत दो खण्ड़ों में बिभाजित हो गया! पाकिसतान बना!

यद्यपि उस वृद्धा की समझ से परे थी यह स्थितियां, परन्तु पन्द्राह अगस्त की इस खुशी से फूली न समाई थी। उसकी इस खुशी में हिस्सा लिया उसके चौथे बेटे रत्तो ने और शामू की मंगेतर गौरी ने।

पर यह खुशी भी अस्थाई थी 1965 के हवाई हमले में रत्तो भी अपनी जान दे बैठा। वह चल बसा केवल मात्र अपनी कहानी छोडकर। बुडिया भी उसकी साहसी मृत्यु की बात सुन चुकी थी और सिर ऊंचा हुआ था भारतीय आन का और हाहाकार कर उठी थी मां की कुचली हुई ममता! उसने सुना—टैंक तोड़ने के लिये उसका रत्तो बम लेकर गुत्प रीति से टैंक के नीचे हो लेट गया! यह जानते हुये भी कि इसके नीचे लेट जाने से उसको बे मौत की मौत हो जाये गी। पर भारत की आन और शान पर मर मिटने वाला यह जवान अपनी जान पर हंसते-हंसते खेल गया... . ...

बुड़िया उठ खड़ी हुई उसकी आँखों में आंसू तैर गये और माथा उन्नत हो गया। दो क्षण के लिए उसे ऐसे लगा जैसे उसने स्वर्गप्राप्ति की हो! पर! कुछ देर बाद सब सूना रोना और अस्पष्ट था.......

मां—मां—मां इसी उच्चारण के लिए वह तडप उठी—पर! उसने साहस न छोड़ा—वह ज़ीती रही भारत के अन्य सुकुमार फूलों को देख-देख कर जो कल के भारत को रक्षा के लिये योग्य रक्षक होंगे। ताकि भारत किसी और पराये हाथ में न पड़े।

वृद्धा छत की मुड़ेर पर दूर उस क्षितिज की ओर देखने लगी उसकी दोनों आँखें न जाने क्या टटोलती थीं। उस घुट-पुट अन्धियारे में। भले ही उसने अपने जीवन में ही भारत की स्वतन्त्रता देखी और उसकी दिनों दिन प्रगति भी यद्यिपि उसने अपना सर्वस्व खो दिया था उस के आह्वान में उसके पास क्या बचा था—कड़वी फीकी यादें जिनसे ठीस उठतो है, और पीड़ा होती है और प्रकृति का व्योग उसकी अनव्याही बहु शामू की मंगेतर गौरी, एक कठिन तपस्या और एक असाध्य साघना।

———

❖ लौ ❖

"अब कैसा जी है तेरा हरीश ?"

"कुछ नहीं दोस्त बस जिये जा रहा हूं बे मतलब और बे मुरौवत।" हरीश ने जीवन से स्वर मैं निराशा प्रकट की।

"नही ! तुम जैसा सिपाही तो शेर दिल होना चाहिए ; पर तुम हो कि एक मामूली से ज़ख्म के लिए अपनी हिम्मत हार बैठे हो। भला ऐसा भी कहीं होता है ?"

"यह घाव मामूली नहीं जिसे तुम मामूली समझ बैठे हो दोस्त ! मैं ने अब तक कई गौलियां खाई हैं और कई लड़ाइयां देखी हैं; पर अव की तो ऐसा लग रहा है कि यह घाव मेरी जान लेके ही रहेगा।"

"मुझे मालूम नहीं था कि तुम इतने कायर हो।" जीवन ने अपनी नाराज़गी दिखाई। सुनकर हरीश से रहा न गया; बिस्तर पर लेटे ही उसकी सूनी आंखों के कोरों में दो-दो मोती उतर आये और उस साहसी सिपाही युवक ने करवट बदल कर अपने दिल की हालत छिपानी चाही, पर वह सफल न हो सका इतने में जीवन की नज़र भी उस पर पड़ी, ऐ-ऐं तुम रो रहे हो मेरे बहादुर सिपाहो ! क्या बात है ? छिपानी नहीं बात मेरी कसम है।

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं।"

"फिर भी मुझसे ज़रूर ही कुछ छिपाया जा रहा है आज! लेकिन हरीश! जानते हो, जो राज़ दिल से उगकर दिल में ही दफन हो जाता है उसका क्या असर हो जाता है।"

"जानता हूं।"

"क्या"

"यही कि उसी राज़ के साथ अपनी भी मौत हो जाती है......काश ऐसे ही कोई मुक्ति पा लेता! लेकिन......में... मैं मर भी तो नहीं सकता। उफ कितनी उलझन भरी है यह मेरी ज़िन्दगी भी। जी करता है दूर कहीं चला जाऊं और पेट भर कर रो लूं, शायद कुछ हल्का हो सकूं! मैं तो जीवन! इस जीवन से तंग आ गया हूं। मेरी हर सांस में किसी के आंसुओं के बरसात की घुटन है! उमस है! और........

"अरे ......रे यह तुमको क्या हुआ हरीश तुमने ऐसा कौन सा पाप किया है; जिस के प्रायश्चित रूप तुम अपने प्राण दे रहे हो घुट-घुट कर बतादो ना प्लीज़।"

"मैं तुम्हें कैसे बताऊं कि मैं आदमी कहलाने लायक नहीं मैं ने पाप किया है अपनी खुशी और अपनी क्षणिक हंसी के लिये हां! दोस्त तुम ठीक ही कह रहे हो कि मैं ड़रपोक हूं! कायर हूं काश मुझमें इतनी हिम्मत होती कि मैं उसका बेसहारा हाथ थाम सकता! दिल की काफी मर्ज़ी होने पर भी मैं समाज से प्रतिरोध न कर सका। मैं ने उसको उसी के हाल पर छोड़ कर अपनी भी

हसरतों का परिस्थिति के पन्जों से गला घोंट दिया। उफ-ओ... जीवन मैंने यह क्या किया! क्या किया!

मैं ने सोचा था कि कुछ देर बाद मैं उसे भूल जाऊं गा मेरी भूल थी! जितना ही उसको भुलाना चाहा उतना ही वह एक सम्चित भय बन कर मेरे दिल में घर करती गई।.........

मैं उसको भुला न सका नही भुला सका! कुछ समय बाद मेरी शादी की बात चली और उस बक्त न जाने क्यों मैं ने कोई विरोध नहीं किया। शादी हुई दुल्हन आई अपने अरमान् और अभिलाषाऐं लेकर। पर किसी और पर लुटा हुआ प्यार मैं उसको नहीं दे सका! मैं जडवत केवल देखता रहा उसको और शून्य में निहारती उसकी दो मोटी-मोटी आंखों को जो शायद अपने बाबुल के साथ ही अपना हंसता रूप भी छोड़ आई थी मुझे इस बात का ज़रा भी ध्यान न रहा कि मेरी इस चुप से उस मासूम पर क्या गज़ब हो रहा हो गा? बहुत रात बीत गई, वह सिमटी सिमटाई सी यूं ही अपने को सम्भाले अपनी आंखों से आंसू बहाये जा रही थी!.........

हं! हं! हं! बेचारी को मुझ पर तरस आया होगा! या वह खुद भी इसी मज़िल को पार करके आई हो! कौन जाने बहुत देर होने पर उसके सबर का बांध टूट चुका था, पर मुझमें भी इतनी ताकत नहीं थी कि मैं उठकर उसके आंसू ही पोंछ लेता अखिर मेरा भी तो कुछ फर्ज था। उसके लिए मैं उसका साथी जो था! जीवन साथी।

लेकिन यह सब मैंने नहीं किया, यहाँ तक कि बिचारी का नाम तक नहीं पूछा! भोर हुई और मैं अपने काम पर चला आया और दूसरे दिन मुझे मोर्चे पर जाने को हुक्म मिला। उफ! अब अगर कोई बात हो तो वह यही कि अपने सुख के लिए इस आग में उस मासूम की आहुति लगाई तो क्यों कर? ठीक ही है कि पुरुष में जहां पर पौरूष की आंच सर्वदा ही नारी के सौम्य का आर्कषण होता है। वहां साथ ही साथ वह अपने को बहुत ऊंचा और महान समझता है जो वास्तव में होता नहीं यह अहं की भावना उसमें सनातन हैं और पुरातन भी!...........

अपने अहं की तृप्ति के लिए वह चाहता है कि जिस स्त्री से उसका सम्बन्ध हो, वह पूर्णतया उसी की हो कर रहे, उसका कुछ भी स्वतन्त्र रूप से अपना कहने को न रहे!........

उसका शरीर, उसका मन, उसकी प्रत्येक कामना, प्रत्येक वासना पुरुष की इच्छा के अनुसार हो जाये। उसके भीतर छुपी हुई कोई भी गुप्त से गुप्त प्रवृति उसकी अपनी हो कर न रहे वह सब कुछ बिना किसी अंसमन्जस के उसके पैरों तले रौन्ध दे! आह! इसी भावना के बहकाव में मैं भी अपनी पहली गल्ती कर चुका! अब उसके लिये........

"कैसी गलती भाई?"

"यही कि राधा से प्यार होकर भी उसको मैं अपना न सका।"

"आखिर क्यों?"

"क्यों कि वह अविवाहित नहीं वल्कि एक त्यक्ता थी। मैं ने जब यह सुना तो उसकी छाया से भी दूर कोसों दूर भागा। लेकिन मन तो दर्पण है उसमें पड़ी छाया कैसे मिट सकती है। कैसे भुलाया जा सकता है यह सब कुछ। जीवन दान देने से पहले मनुष्य में त्याग, बलिदान और चुपचाप जलजाने का अभ्यास चाहिये और उसके अलावा धीरज और सन्तोष की भी आवश्यकता है। किसी के चेहरे पर मुस्कराहट पैदा करने के लिये अपने आंसुओं को पी जाना पड़ता है पर! पर! मैं यह सब कुछ न कर सका। मेंने अपने दुःख के पीछे अपनी पत्नि को पृथक समझा एकदम पृथक! ......और अपनी प्रिय और इच्छित वस्तु से विमुख हो जाने से जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं, जब कि हम जीते हैं तो बिना किसी लक्ष्य के और कभी मरते हैं तो बिना मौत के।........

सोचता हूं काश! यही एक गोली मेरा तभी अन्त कर देती।

थोडी देर कमरे में निस्तव्दता रही फिर गहरी सांस ले कर जीवन बोला, "तुम्हारी कहानी तो वाकई बड़ी अजीब है, पर! इसका कतई यह मतलब नहीं कि तुम अपना धीरज ही छोड़ दो। देखो हरीश! तुम्हें जीना होगा। अपने लिये न सही, अपनी विवाहिता पत्नि के लिये जिसकी मांग में तुमने सिन्दूर भरा है, अंगारे नहीं!"

"नहीं जीवन, मुझ से यह नहीं होता जब उसको देखता हूं तो राधा और उसकी गाई यह पक्तियां याद आती हैं:—

"मुझे गोर से न देखो
मैं वह नामुराद गुल हूं।
जिसे तूने रौन्ध ड़ाला—
इक बेज़ुबान समझके!"
नहीं! नहीं......न ही ई ईं।।

मैं राधा से धोखा नहीं कर सकता......

इतना कहते-कहते ही न जाने हरीश को क्या हुआ। वह एकदम निर्जीव सा वन गया। ड़ाक्टरों को बुलाया पर बेकार उसकी तो हृदय गति बन्द हो चुकी थी।
(भाग दो)

अजीब सी दशा में परदेशीय मित्र मर जाने से 'जीवन' के जीवन का दृष्टिकोण ही जैसे बदल गया। उसे भी याद आया कभी उसने भी किसी को अपनाया था, प्यार किया था लेकिन अपनी कायरता के कारण अपने राज़ को अपने माँ-बाप के सामने न खोल सका था, और दिल को दिल में ही रही थी। फिर इलाहाबाद छोड़ कर। यहां आया, तब से बहुत साल हुए पर उसे कुछ नहीं मालूम। उसको भी याद आने लगी उस प्यार को जो कभी का भूल चुका था। नह! अब वह कायरता को छोड़े गया। और आगे वढ़कर अपने प्यार का स्वागत करे गा

हरीश के मरने के कुछ समय बाद उसके मन में आया क्यों न वह छुटी लेकर इलाहाबाद चला जाये और उसकी मां और पत्नि को ढ़ारस दे आये। उसने छुट्टी ली और चला गया हरीश के घर.........

हरीश की मां बेचारी तो रो रो के बेहाल हो ही गई थी पर बहु को समझा के जैसे हार गई थी, उसने जीवन से कहा... "बेटा ज़रा बहु को तो समझा कुछ, इसने सब कुछ छोड़ रखा है जिये गी तो कैसे ?

जीवन को जैसे याद आया बोला, हां हां माभी! कहां हैं वह ज़रा समझा दूं उनको।" और कहते-२ उसके कमरे की ओर लपका पर दरवाज़े पर पहुंच कर उसके कदम जैसे लड़-खड़ा गये! उसने दीवार का सहारा लिया वह गिरने लगा उसका सिर घूमने लगा अपने को मुशिकिल से दीवार का सहारा लेकर सम्भालते हुए वह केवल निहारता रहा देखता रहा उसकी दो मोटो-मोटी रोकर सूजी और लाल हुई आंखों को जिनमें कभी उसने प्यारकी लौ देखी थी।

⁘ सिर्फ एक शर्त पर ⁘

शाम को खाना खाने के बाद हम जो बातों में लगीं तो लगीं ही रहीं, क्योंकि औरतें जब बातें शुरू करती हैं तो वह खत्म होने पर कभो नहीं आती। ठीक ही तो कहा है किसी ने, रमा कहे जा रही थो, कि स्वंग नरक सभो कुछ यहीं है। वे तसल्ली रूह भटकती है अर्थात् कोई प्यासा ही मर जाये तो उसकी आत्मा भूत-जिन बगैरा का रूप ले लेती हैं ....

और मैं सुनते-सुनते जैसे सहम सी जाती थी कभी उठकर अन्धकार की और खुली खिड़की के पट बन्द कर देती, तो कभी अपनी आंखे वड़े प्रयत्नों से बन्दकर देती परन्तु फिर भी मेरी आंखे सामने रात के फैले अन्धकार में अजीव-अजीब सी शक्लें कैसे देख ही पाती थीं ....

वह कहतो जा रही थी...........
आत्माओं यानि भूतों व प्रेतों को आवाज़ें भो संक्षिप्त और तीखी होती हैं, बहुत कुछ बिल्ली की म्यों जैसी ...... उसका यह कहना था कि मेरे हलक से एक चीख निकलते २ रह गई, परन्तु मेरे छिपने के प्रयत्नों से कोई अनजान न रहा सभी ने तो मुझे पैंतरा बदलते देख लिया था और मेरे इस तरह के रूप को देखकर ठठ्ठा कर हस पड़ीं वे सभी लोग। इस पर शोभा जो मेरे साथ ही बैठी थी, बोली, "भाई यह तो अपना २ दिल है इस पर हंसने की क्या बात है। कई तो ऐसे सूरमा हैं जो शमशान भूमि पर जलते शव

पर अपनी सान्घयोपासना करते हैं। और कई ऐसे हैं जो किसी मरे हुये की विकृत शक्ल देखकर डर से सहम जाते हैं........

क्योंकि उन्हें अपनी मौत याद आती है, क्यों है न यही बात ? शामा ने टोक दिया।

शोभा ने उसे भी समझाने के अन्दाज़ में जैसे कुछ दिया ... "यह सब अपना-अपना ख्याल है, नही तो न कोई जिन है और न कोई भूत बल्कि खाली बहम है बहम और कुछ नही।"

उसकी इतनी बात थी कि रमा जल सी गई उसने कहा... " भाई ! यह तो ऐसी कोई बात नही जिसे सिद्ध किया जा सके। बल्कि में यही कहूं गी कि ऐसे झमेलों में पढ़ने से बेहतर यही है कि दूर ही रहा जाये। क्योंकि यह बातें यधपि हमैं कोई फायदा नही देती पर हानि ज़रूर करती हैं। "

" हानि ही नही जिनाब बल्कि अक्सर आदमी अपनी प्यारी सी जान से भी हाथ धो बैठता है।" शामा ने बात पूरी की। अब रमा फिर कहने लगी.........— " जहां बस्ती होती है वहाँ यह लोग उतनी तेदाद में नहीं होते; और जहां वीरान या सुनशान सा होता है, यह वहाँ अपने झुन्ड़ों में होते हैं, मैं तो बाबा कभी भी ऐसे स्थानों पर नही जाती...............

उसका यह कहना था कि मैं डर और भय से एकदम सिमट सी गई मुझे विचार आया कि हमारे मकान के पिछवाड़े तो बिल-कुल सुनसान हैं तो वहां भी भूत प्रेत होंगे। तभी थोड़ी देर बाद मुझे ऐसा लगा कि कोई कमरे की पीछे वाली खिड़की बजा रहा है

फिर म्याऊं की सी आवाज़ आ गई, उसके बाद ऐसा लगा मानो कोई मेरे ऊपर मन मन वज़न के कई पत्थर एक साथ रखा गया हो मैं हिल भी न सकी केवल दृष्टि से चारों और निहारने लगी। परन्तु उपस्थित लोगों को क्या था वे तो बातों में मस्त थे "मैं इन बातों से डरती हूं, भाई माफ रखियो अब कोई और बात चलायें" मैंने प्रार्थना की, इस पर शोभा ठठा कर हंसी और बोली, 'भई कमज़कम तुम जैसी लडकी को तो इन जैसी बातों से डरना नहीं चाहिये। तुम्हें तो आगे न जाने अकेले रहना पड़े तो तब क्या हो गा ?" रमा ने कहा !

शोभा को इस बात पर ताव आ गया सो वह कहने लगी, "भई क्यों बिचारी को तंग करने पर तुली हुई हो। यह सब बातें सिफ एक ख्याल है, चलो तुम्हें होस्टल की एक कहानी सुनाती हूं। सुनो—

एक दफा मेडिकल कालेज के कुछ छात्रों में भी हमारी ही तरह बहस चल रही थी। कोई मानता था और कोई नहीं मानता था। अन्त में एक शर्त हुई कि प्रयोग केलिये आई लाशों के कमरे में जाया जाये और वहां पर लगी सभी लाशों के मुंह में एक-एक बतासा रखा जाये। जो यह काम करेगा उसे 100 रुपये जीतने होंगे शत पर। शर्त है रात के दो बजे अकेले जा कर और गिन कर लाशों का नम्बर भी बताना होगा। काम तो बड़ा आसान था पर समय बड़ा अजीब सा और उसपर लाशों का स्थान भी शहर या स्वंय उस होस्टल से काफी दूर था। रात भयानक और अन्धेरी कइयों ने शर्त के 100 रुपये जीतने केलिये कोशिश करनी चाही पर ! रात का विकराल रूप देखकर सभी डर गये। उस पर जिस

ने यह शर्त रखी, वही यह काम करने को तैय्यार हुआ। बतासे लाये गये। तो उस से चाबी भी मांगी गई। फिर रात को उन महाशय का सफर शुरू हुआ काम तो आसान ही था, फिर भी मानवीय दुर्बलता कि रह रह कर उन्हें अजीब सी पदचाप सुनाई दी। खैर! मुशिकिल से अपना जी कड़ा कर के वे जो लाशों के मुंह में एक-एक कर के बतासा डालते गये तो गिनना भूल गये। इसी ग्रुप का एक और लड़का जो बहुत ही शरारती था वह उनके पीछे-पीछे चल कर वहीं पहुंचा था। पर! किसी अदृश्य डर से अन्दर न जा सका सो बाहर ही उन की प्रतीक्षा करने लगा। जब यह गिनकर बाहर निकलने को हुये तो बिलकुल सुनसान और चुपी थी। चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा था सो अपना काम करके वह वापिस जब जाने लगे तो साथ वाले ने महज गर्व के पीछे-पीछे तेज़ी से आते हुए कहा........ ...

"और रूको ना बाबू! मुझे बतासा देना भूल गये हो।" उसका यह कहना था कि वे महाशय बेतहाश्य दौड़े और जब शक्ति बिल्कुल जवाब दे गई तो वहीं सड़क के किनारे पर बेसुध हो कर गिर पड़े, और सुबह सब लोगों को समाचार मिला कि उनके एक साथी की अजीब ढंग से मृत्यु हुई है।

❀ बयान ❀

अदालत में बड़ी भीड़ थी बड़े लोग आये थे केस सुनने। लोग आपस में खुसर पुसर कर रहे थे। कोई कहता, "औरत जात ही बड़ी बेवफा होती है" तो कोई कहता, "समझ नही आता कि अगर उसको घर वाला अपना अच्छा नहीं लगता था तो तलाक दे देती पर! मारा क्यों?" तो तीसरा कहता, "बड़ा अन्धेर है भाई आजकल तो ज़िन्दगी भी जैसे मूली-गाजर की तरह सस्ती हो गई है कि मर्ज़ी हुई तो जिसे चाहा मार दिया।"

इतने में अदालत में जज आ गये और केस पेश किया गया अपराधी को कटघरे में लाया गया सफेद साड़ी में लिपटी एक सौम्य मूर्ति। शान्त स्थिर और ओजस्वनी युवा स्त्री। उसके कटघरे में आने पर सरकारी वकील ने कहा सरकार मुलज़िम बनाम सरदार हाज़िर है।

इस आवाज़ पर जज ने जो अपराधी की ओर देखा तो थोड़ी देर केलिये स्तब्ध सा रह गया, और सोचने लगा, किसी ने सच ही कहा है कि मुखौटे हमेशा धोखा देते हैं नहीं तो इतनी सुन्दर सी औरत देखने में बिल्कुल दय की मुर्ति लगती है, ऐसा भयानक कार्य कर सकती है. खे‹ क्या पता क्या मुसीबत आई होगी बिचारी पर ... क्या मामला है सच सच बतादो लड़की।

जिनाब मैंने हमीद का खून किया है ।

हमीद तुम्हारा क्या लगता था ?

" वह मेरा खाविन्द था । "

इसका यह मतलब हुआ कि तुम ने अपने खाविन्द का खून किया है, मगर क्यों ?

क्यों, के बारे में अगर पूछा हो न जाये तो अच्छा है जज-साहिब ।

"लेकिन यह तो अदालत है यहां हरेक बात का पता चलना ज़रूरी है ।"

तो सुनिये ....

ग्यारह साल हुये मेरी हमीद से शादी हुई, और ज़िन्दगी के पहले सात साल बड़ी अच्छी तरह गुज़रे फिर एकाएक न जाने उसको क्या हुआ कि वह पाकिस्तान जाने को तय्यार हो गया । यह बात उन दिनों की है जबकि पाकिस्तान ने भारत पर अनजाने हमला करके हथियाने की कोशिश करी थी पर नाकाम रहा । पहले तो इसने सबको पकिस्तान ले जाना चाहा पर जब हम में से कोई राज़ी न हुआ तो मजबूर हो इसे भी हमारे साथ ही यहीं रहना पड़ा लेकिन तब से इसने सबके साथ रहना ही छोड़ दिया । रोज़ सारा सारा दिन बाहर घुमा करता और बहुत रात गये घर आता इस तरह भी अब तक करीब चार साल गुज़रे और यह अपना काम करता गया परसों जुमा के दिन यह सुबह से ही बड़ा परेशान सा नजर आया कभी छत पर चला जाता और कभी कमरों में

बिल्कुल उन चारों की तरह जो अपने साये से भी ड़रते हैं। मुझे कुछ शक सा पड़ा। मैं ताक में रही। शक मुझे उस बात का कतई नहीं हुआ था, जो असल में थी, बल्कि मुझे शक यह हुआ था कि कहीं इसका पागल पन का दौरा तो शुरू नहीं हुआ। मैं इसी फिकर में इसके पीछे रही। और.........और.........शाम को करीब आठ बजे यह बन्द कमरे में अटैची खोले माचिस नुमा किसी चीज़ से बातें कर रहा था मुझे यह देखकर पक्का शक हुआ कि आवश्य ही यह पागल हो गया है, और तब उत्सुकता से कि देखें क्या बोलता है मैं दरवाजे के साथ कान लगा कर सुनने लगी .. यह कह रहा था...... "ओखला के पानी में जो कल ज़हर ड़ालने का प्रोग्राम था, नहीं हो सका इसलिये आज कोशिश करेंगे और उसका नक्शा इस तरह है ....और .....और मैं कुछ भी सुन न सकी। न जाने मुझे कहां से ताकत मिली कि मैंने मुर्गा काटने का छुरा उस पर दे मारा। और.........और.........

एक चीख के साथ उसकी नापाक रूह उड़ गई। ....

थोड़ी देर ठहर कर वह फिर बोली—— छुरा असकी पीठ में लगा हुआ था ......और वह——वह ....

लहू लुहान होकर कमरे में छटपटा रहा था . उसकी......उसकी हालत ज़ब्रह किये हुये बकरे की सी थी। आंखें फटी हुई और मुहं जिन्दगी की कशमकश से थका हारा। थोड़ी देर छटपटाने के बाद आखिर को उसकी गर्दन एक और को लुढक पड़ी। तब मुझे होश आई कि मैं ने ......मैं ने......... हां......हां मेरे इन हाथों ने उसका खून किया है। मुझे इसकी सज़ा मिलनी चाहिये जज साहब मैं खूनी हूं। पर ! सच कहती हूं कि उस समय

और कोई चारा ही न था।

हम अगर भारत की सेवा नहीं कर सके पर! दुष्मनी भी क्यों करें यहां भगत सिंह जैसे बहादुर और लाला लाजपत राय जैसे वीर पैदा हुए हैं उस जैसे देशद्रोही नहीं! जज साहब उसे ऐसी ही सज़ा मिलनी चाहिये थी क्यों कि वह बागी था बागी। देश का दुष्मन।

गांव में

"भाई सरण से उत्तरते रमण को बड़ी देर होने लगी, यहां तक कि अन्धेरा भी छाने लगा। पहलगाम पहुंचने में तो न जाने कितना वख्त और लगे। रास्ता भी पूरा मालूम नहीं जाये तो किस तरह? ....

रमण को यही चिन्ता लगी!........ अपनी ओर से तो वह काफ़ी तेज़ चलने लगा था। पर फिर भी रास्ता दूर ही होता दिखाई दे रहा था। और अन्धेरा भी बढ़ने लगा था। उसके मन में आया कि क्यों न आज को रात सामने वाले गांव में काट ली जाये तो भोर होते ही पहलगाम पहुंच जाये गा।

उसने पगड़ण्डी की बाई ओर नजर मारी तो लहलहाते खेतों में खेतीहर डूबते दिन के साथ ही साथ अपने काम मस्त किसी सुन्दर से गोत की लय में डूब रहे थे। फिरनों में किसी काशमीरी गीत की लय पर ताल दे रहे थे। बोल इस प्रकार थे।

"हां अश्क यूरो रश्क करथंस देवान तय पनुन असिथ
क्याजि लोगुथ बेगान तय"

अर्थात :—

"औ मेरे प्रियतम तूने मुझे तड़पाया और दीवाना बनाया
इतना होने पर भी क्यों पराये हो गये हो?"

यद्यपि गीत के बोल उसकी समझ से परे थे फिर भी न जाने क्यों इस सहगान ने एक प्रकार से........जादू सा कर दिया ....वह न जाने किस दुनिया में खो गया, उसको कुछ भी सुध न रही कि वह एक परदेसी है और उसने रात भर के लिए जगह ढूंढनी है। वह थोड़ी देर के लिए मन्त्र मुग्ध सा देखता रहा गांव की इस सदाकत को और जो कि शहरी रंगीनी और नजाकत से दूर कोसों दूर लगती थी। यह कृषक कुमारियाँ अपनी मस्ती में मस्त अलबेली चाल में गीत की ताल दे रही थीं। रमण के दिल में विचार आया काश! इनके पास भी इव-ड़ो-ब्लौंग होता! काश इनकी 'भी- तों टाइट' और 'हिप टाइट' पोशाकें होतीं—तो यह कितनी खूबसूरत लगतीं। वाकई इनकी ...... इनकी सुन्दरता को देखकर किसी शायर के बोल याद आ रहे हैं :

"नहीं मोहताज ज़ेवर का जिसे खूबी खुदा ने दी।"

इन्हें भी जैसे ईश्वर ने अपने हाथों से बनाया है। संग-मरमर का रंग और नाजुक सी अदायें! इन सुन्दरियों को जैसे सोलाह श्रृङ्गार किये गये है। आहा! बोली सी यह चंचल कुमारियां! कितनी कातिल हैं इन की यह भोली सूरत! मगर इनको मालूम नहीं कि इनको इस मासूम सी सूरत में कितनी विशाल सीरत छिपी हुई है। इनको दर्द छू भी नहीं गया है। यह क्या जाने कि इन के इशारों में कौन सी बिजली छुपी हुई है काश! शहरों में भी एसा होता इन के लिए जैसे छल या कपट पैदा हुआ ही नहीं। इनका सारा जीवन ही जैसे एकता, विश्वास और प्यार पर ही आधारित है। काश मैं भी इन्हीं बातों को सोचते-सोचते रमण एक मकान के

अंगन में आ ही गया।

यहाँ पर दो तीन युवतियाँ एक निराली ही वेशभूशा को देखकर हैरान सी रह गईं। एक बूड़ा मकान के बरामदे में घास की चटाई (पतज) पर मिट्टी का हुक्का गुड-गुडा रहा था! बूडा कुछ सनकी सा लग रहा था। वह कभो आगन्तुक से बात करने का इच्छुक सा लगता और तभी तत्तकाल ही अनेच्छा से जैसे मुंह मोड़ लेता था उसके वृद हृदय ने कभी गहरी चोट खाई हो उसकी लाल आंखें ही केवल दिखाई देतो थीं उसके समूचे व्यक्तित्व में! रूखे उलझे बालों पर एक मैली सी सादी टोपी। गाल चिपके हुए! उसको देख कर यह अन्दाज़ा लगाया जा सकता था कि कभो सुन्दर रहा होगा पर तब तो अवशेष मात्र हो था।.......

रमण को यहां खड़े हुए बड़ी देर हुई; तब भी उस वृद्ध ने उसे पूछा तक नहीं! वह बेचारा यह अजीब सा वातावरण देख कर तो पहले अश्चिंय चकित हुआ, पर! तत्काल ही अपनी परिस्थिति का ध्यान आते ही वह प्रार्थनामय स्वर में वृद्ध से बोला ......"बाबा"! क्या मुझे रात भर के लिए ठहरने को जगह मिल सकती है? वृद्ध चौंक सा पड़ा और बोला..... क्यों किस लिये?

जवाब सुन कर रमण के मन में आया कि चलदें परन्तु फिर देर ओंर राह की अनभिज्ञता का विचार आते ही वह गिड़-गिड़ाये स्वर में बोला ...."बाबा मैं परदेसी हूं रात हो गई है, मुझे पहलगाम जाना है, इसलिए थोड़ी सी जगह देने में आप को हर्ज़ ही क्या है?"

"काफी हर्ज है ! समझे अब यह बूढ़ा बातों में आने वाला नहीं ! जाओ जाओ।"

रमण ने फिर प्रार्थनामय स्वर में कहा......क्या आपके पास दया नाम की कोई चीज़ नहीं। यदि मुझे रास्ता सही होता तो मैं कभी भी आपको कष्ट नहीं देता !

सुन कर बूढ़े ने सिर बिना उठाये ही कहा, "अच्छा यहां बरामदे में रात भर रहो और सुबह होते ही चले जाना समझे।"

"अच्छा बाबा" कहकर रमण बड़े ही साधे ढ़ंग से जाकर चटाई पर बैठ गया। कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद बूढ़े ने ऊंचे स्वर में कहा, "तुम्हीं शहरियों ने तो मेरी ज़िन्दगी तबाह करके रख दी है।"

रमण यह सुनते ही बहुत हैरान हुआ बोला, वह कैसे ?

"तुम से मतलब ?"

"कुछ नहीं" धीमे स्वर में रमण ने उतर दिया।

फिर थोड़ी देर की चुप्पी को तोड़ते हुए बूढ़ा बोला, माफ करना भाई ! घुस्से में आकर न जाने क्या-क्या मुहं से निकल गया वैसे जो कुछ मैं कह गया हूं नहीं कहना चाहिये था मुझे ! पर क्या करूं। बदला लेना चाहता हूं ना शहरों और शहरियों के धोखे से पूर्ण रिवाज़ों का ! नूरी कितनी भोली सी लड़की थी।

नाम सुनते ही रमण के मन में उत्सुकता और जाग पड़ी

तो वह बोला

"यह नूरी कौन है बाबा ?"

"मेरी इकलौती बेटी "

"क्यों उसको क्या हुआ ?"

कुछ नहीं ! रहने दो, नूरी की रुह तडपेगी ! अरे तुमने कुछ खाया ही नहीं तो रात कैसे कटे गी। भाई चल उठ कुछ खा ले !

"नहीं बाबा ! मुझे भूख नहीं ! पर मुझे कृपा करके नूरी के बारे में बताओ ना।"

नहीं ! नहीं ! मुझे नूरी ने मना कर दिया है ! नही परदेसी। मैं तो न कहूं गा मेरी नूरी की रुह तड़पे गी। "पर इसमें उसकी रूह तड़पेगी तो कैसे ? आप मुझे कुछ बताने से गुणाह तो नहीं कर रहे हैं, इसमें नूरी का स्वाल ही नहीं पैदा होता

बूड़े की आंखों में स्मृतियों ने अपने हवादार आंचल लहराये, कि सागर छलला उठा..... वह अवरूध कण्ठ से मुशिकिल ही आवाज़ बाहर निकाल सका। "बेटा क्या करोगे वह कहानी सुनकर। इस तरीके पर रमण को कोई हैरानी न हुई क्यों कि इस सब के लिए वह पहले ही तैय्यार था। बोला, "बाबा चाहे जो कुछ भी हो आप को कहानी सुनानी होगी"

बूड़े ने जैसे लाचार सा हो कर कहा......"देखो बेटा। नूरी मेरी इकलौती बेटी थी जो मेरी आरिज़ूओं से खेल कर उस

जहां में चली गई है जहां से कोई लौट नहीं आता।" बूड़े की आंखों में आंसू आ गये और रुक कर बोला, " तुम कहो गे क्यों ? तो लो सुनो ...

आज से कुछ साल पहले हमारे इसी गांव में तुम्हारी ही तरह एक सैयाह विज़िटर आया था। शायद पढ़ता था लेकिन फिरता था पत्थरों की खोज में। बिल्कुल तुम्हारी तरह कोट पैंट लगाये और कमाल यह कि तुमसे बहुत कुछ मिलता हुआ सा शक्ल में। आया था केवल दो एक दिन के लिये पर बैठ गया कोई दो महीने। उसका नाम था करोम देखने सुनने में बड़ा हीं होनहार और मिलनसार, बड़ा मीठा बोलता था वह। और बहुत ही अदब था उसमें। उसको और उसकी खुशतमीज़ी पर में कई दफा सोचता कि क्या ही अच्छा होता अगर यह नूरो का हो जाता पर! हम ठहरे गांव के अनढ़ किसान और वह शहर का पड़ा लिखा छोकरा ... क्या वह यह बातें मान भी लेगा ... इसी ख्याल से हमेशा ही चुप रहता, और अगर कभी कहना भी कुछ चाहता, तो उसके अदब के आगे मेरी ज़ुबान न खुलती। पर! एक दिन जब में मस्जिद से वापिस आ रहा था तो मेरी नज़र उन सामने के मक्की वाले खेतों पर पड़ी, मैंने देखा...... मक्की के लम्बे लम्बे पौधों के झुर मुट में नूरी और करीम दोनों ही एक दूसरे के सहारे खड़े कुछ बातें कर रहे थे .... तो उस दिन मेरे मन में आया कि इसे पूछ लेना ही चाहिये। तो इसके कोई दूसरे या तीसरे दिन मैं उसे पूछ ही बैठा, "करोम! तेरी शादी तो हुई होगी"

उसका जवाब था "नहीं बाबा! गरीबों का कौन होता है शादो करने वाला ?"

मैंने फिर स्वाल किया," इतने बड़े हो गये हो। अच्छी पढ़ाई कर रहे हो यह नामुमकिन है।" उसने फिर उसी नरमी से जवाब दिया दुनिया में मैंने सिफ मां को ही देखा है और कोई रिश्ता हो तो मुझे मालूम नहीं। उसी मां ने मुझे पाला-पोसा और बड़ा बनाया है। सो जब उसकी मर्ज़ी होगी तो मेरी शादी भी हो सकती है।"

मैंने ज़िरह की—"क्या मतलब ! मर्ज़ी तो इन्सान की अपनी होती है; और कर बड़े लेते हैं अगर तुम्हारी मर्ज़ी हमारी नूरी से शादी करने की है तो अपनी मां को लिखो फिर तुम्हारी शादी भी होगी।"

मेरे इन अलफाज़ को सुनकर वह कुछ-कुछ तो खुश हुआ और साथ ही कुछ परेशान भी। परेशानी किस लिए इतना उस वक्त मैं समझा नहीं ! खेर ! उसने जवाब दिया..."अच्छा बाबा लिखूंगा।

मेरी ज़िद से तबसे करीम हमारे हां ही रहने लगा। कोई दो हफ्ता वाद मैंने उसे फिर याद दिलाई..."बेटा ! क्या तुम ने अपनी मां को लिखा था?" मेरी इस बात से वह थोड़ी देर के लिए सकपका सा गया। लेकिन तभी सम्भल कर उस ने जवाब दिया..."याद नहीं रहा आज ज़रूर लिख दूंगा।"

उसी शाम को जब मैं इसी जगह हुक्का पी रहा था तो करीम लपक कर मेरे पास आया और और मुझे से मुखातिब हुआ अब्बा आप शादीं की तैयारी करें मैं अपने शहर जा कर अपनी मां को लेता आऊंगा।

मैं ने भी खुश हो कर पूछा...“तो कब जा रहे हो बेटा”

“बस कल की गाड़ी से” उसका जवाब था। रात भर नूरी और वह दोनों ही जागते रहे, एक दूसरे से गिले-शिकवे और न जाने क्या-क्या करते रहे। आखिर सुबह आई तो करीम अपने शहर चला गया।

दिन बीते, सप्ताह बीते, महीने बीते लेकिन करीम न आया। उस बेवफा ने मेरी मासूम बच्ची को कहीं का न रखा। मेरी नूरी इन्तिज़ार करते-करते सूख गई। लेकिन वह न आया।

इधर नूरी का पेट बढ़ने लगा। लोगों के ताने चुप-चुप वह सुन सह लेती थी। पर जब करीम को गये आठ महीने भी हुए और वह न आया तो एक दिन मजबूर हो वह मेरे पास आई उसके हाथ में करीम की फोटो थी बोली......अब्बा. वह तो नहीं आये। और अब शायद मेरे जीते जी नहीं आयें गे। लेकिन अगर वह कभी इस ओर आयें तो यह फोटो देकर कहना.......... कि अब मुझ में लोगों की बातें सुनने की ताब नहीं कि लोग यह भी कहें–...नूरी शादी से पहले हो... ...यह कहते-कहते ही वह भागती-भागती सामने के “लिद्दर! की ठाठें मारती हुई भयानक लहरों में कूद गई. इस तरह तुम शहरियों ने मेरी ज़िन्दगी में तूफान लाकर उसे वीरान और सुनसान बना दिया।”

इतना कहते हुए वृद्ध अपना संयम खोकर रो पड़ा दहाड़ मार कर रमन भी अपने आंसुओं को न रोक सका और साथ हो आवेग में आकर वह भी ज़िद सा करने लगा......बाबा! ज़रा

दिखा भी दो ना उस उल्लू के पट्ठे को देख तो लूं कि गधों की शक्ल कैसी होती है।"

बूढ़े ने बड़े ही इतमिनान से अपनी मैली सी पोटली खोल कर। एक गन्दी सी रुमाल में लपेटा फोटो निकाल कर उसे दिया.. ......

पर ज्यों ही रमण ने फोटो हाथ में लिया तो उसको न जाने क्या हुआ चक्कर जैसे आया, सारी कायनात हिलती सी नज़र आने लगी। वह अपने को वश में न कर सका, एकदम बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा क्यों कि यह साहब कोई और नहीं उसके अपने पिता जी थे जो मानसिक उलझाव और प्राकृतिक कमज़ोरी के कारण विश्वानाथ से करीम बन गये थे और अपने व्यापार के सिलसिले में अक्सर काश्मीर आया करते थे।

❀ देखने पर ❀

शम्भू नाथ की पत्नि अजीब से रुख देखकर कभी तो उसके मनमें दया आती और कभी वड़ा घुस्सा आता उसे लगता कि यह औरत सब झुठा हो अभिनय करती है, खैर। कहे क्या और समझाये किसे ? वह जो उनका अपना कोई नहीं था।

घर आता तो अपनी पत्नि से उसके वारे में बात चलती तो वह कहती......अवश्य हो इसी पुली के नीचे कुछ है। नहीं रमा अक्सर इसी का नाम क्यों लेती है ?"

"क्या कहती हैं वह ?" उसने चौंक कर पूछा।

"यही कि वहां के दिये इधर-उधर घूम रहे हैं। और मैं वहीं का दिया हूं इसने मुझे क्यों तंग किया अब दम न लेने दूंगा ......और......और भी न जाने क्या ?"

पर उसने ज़ोर देकर पत्नि से फिर पूछा " बात असल में क्या हुई ? कहो ना।"

"कहते हैं एक बार यह और नायब साहब की बीबी इसी पुली से पार ड़िसपैन्सरी जा रहे थे। शाम का समय था थोड़ा-थोड़ा अन्धेरा था। यह लोग जब वापिस आये तो नायब साहब की बीबी ने कहा कि यहां ज़रा सावधान रहना। यहां पर किसी

की रूह यानि प्रेत का साया है पर इसने अपनी नादानी से इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, बल्कि खूब हंसी और मस्ती से थूकने लगी वहां पर और तभी से पगला भी गई है। नहीं तो पहले चंगी-भली थी। हां-हां! बेचारी।

"ऐं तो यह बात है। तब तो बड़ी अजीब बात हुई। सच बताना! क्या तुम्हें भी यह सब सच ही लगता है?"

"बात सच हो या झूठ पर! जब प्रमाण सामने हो तो बिश्वास न करना मूर्खता है।"

पत्नि की यह बात सुनकर वह भी थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गया उसके दिमाग में यह बात आई कि हो सकता है शायद यह बात सची ही हो। तो ऐसी बातों से छुटकारा मिले तो कैसे वह सोचने लगा।......

"कहते हैं कि कई लोग इनसे मिलने के लिये मन्त्र जाप करते हैं" पत्नि बोली।

"उनको इनसे मिलकर क्या मिलता होगा।"

"यही कि वे अपनी मर्जी से दुनिया को नचा सकते हैं। और अपने जादू टोनों से दुनियां को वश कर सकते हैं।"

"तब तो बड़ी मुशकिल हुई आदमी कैसे जिये इनके बीच"

"इनसे बचने के लिये देवी के मन्त्र का जाप होता हैं। और आदमी समय का खास ख्याल रखे तो कुछ परवाह नहीं।"

"समय से मतलब"

"यानि अन्धेरे में ऐसी जगह घूमना नहीं चाहिए।"

वह अब हमेशा समय का खास ख्याल करके हो इस पुली की ओर जाता, जब कभी कोई बिशेष काम पड़ता तो, नहीं तो, उस ओर जाता ही नहीं।

एक दिन पुली के उस पार उसे कुछ दोस्तों के साथ ताश खेलते रात के कोई बारह बज गये। और अब उसके सामने पुली के इस पार आने की समस्या खड़ी हो गई।

वह कई बार सोचता कि न जाये पर तभी घर में अकेली पत्नि का विचार आता इसलिए वह काफी सोचने के बाद ईश्वर का नाम लेकर अन्धकार के सांय-सांय को चीरता हुआ उसी पुली की ओर चल पड़ा। अपनी रक्षा हेतु उस के हाथ में एक छड़ी थी और वह आहिसता से आगे बढ़ रहा था।

धीरे-धीरे पुली की ढ़लवान भी सामने आती गई। उस का दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। उसे दिखाई दिया कि पुली के नीचे एक बहुत बड़ी चट्टान पर हर ओर से एक-एक दिया जल रहा है। ज्यों ही वह आगे बढ़ता जा रहा था उसे वह दिया चलता सा नजर आता था उसका दिल बैठा जा रहा था, पर; द्विवदा में था वह कि आगे बढ़े या पीछे मुड़े। रात भयानक तो थी ही पर इस दृश्य से और भी भयानक लग रही थी। कभी-कभी ज़ोरों की हवा सामने के पहाड़ी झरने के स्वर संगीत को और भी अधिक अजीब बना रही थी। बीच में उल्लों की आवाज़

उसको एकबारगी ही चौंका देती पर। अपने कर्तव्य से प्रेरित हो वह आगे बढ़ता जा रहा था।

उस चट्टान के कुछ समीप आने पर उसे अब बहुत से दिये दिखाई देने लगे, टिमटिमाते हुए दिये, इधर-उधर घूमते दिये, हवा भी सांय-सांय में, उल्लूओं की आवाज़ों में बोलते दिये! उस के गले से एक दबी सी चीख निकली और वह वहीं बैठ गया। आंखें फाड़ कर इधर-उधर देखने लगा उसे लगा जैसे यह नाचते चलते दिये उसके नज़दीक आने लगे हैं। वापिस दौड़ने की कोशिश की पर पांव इतने भारी हो गये कि एकदम भी न चल सका वह, तभी थोड़ी देर ठहर कर उसको ऐसा मालूम हुआ कि दिये सभी मिलकर एक जगह बैठे हैं। तभी विचार आया......अब तो इनमें फंस ही गया हूं तो क्यों न नज़दीक जाऊं और देखलूं कि असल में कितने दिये हैं यह... ..

वह उठा और आगे बढ़ते हुए धीरे-धीरे उस चट्टान पर पहुंच गया। पहुंच कर उन दियों की जोत के आगे बैट गया झुकके देख लिया तो दिये गायब पाये केवल मात्र थोड़ी सी चमकती रौशनी दिखाई दी हिम्मत करके जो हाथ को छड़ी से हिलाया तो क्या देखता है..... अरे यह तो जुगनू थे।

❀ जवाब ❀

मां शामा की बातों से जैसे संकेत में आ गई । उसके सीमित से मस्तिष्क में केवल मात्र यही प्रशन रह रह कर कौन्ध रहा था, कि उसकी शामा एक दूसरी जात के युवक से शादी करे तो किस तरह ? क्या उसे दुनिया उंगली से इशारा नहीं करेगी। उसने बहुत कुछ समझाया भी लडकी को पर आजकल की रोशनी रही कौन मानता है इन विचारों को सो शामा अपनी बात पर अडी रही। यही नहीं बल्कि इस नौजवान की आगे भी एक शादी हो चुकी है ! और कहते हैं किसी हादिसे से मर गई। जिसकी किस्मत में औरत का सुख भद्दा नहों तो स्वंय पड़े ऐसे के पल्ले, पर क्या करे वह भी जब कि लड़की बाज़ ही नहीं आती अब माँ विचारी उसके बारे में सब खोज खबर लाती लेकिन इतनी दूर देस को खबर वह कैसे और किससे लायेगी। क्या करे लाचार है वह ? सोचती है कोई जान कार हो काशमीर का कोशिश से तो पता लगे। लेकिन शामा सब कुछ नहीं चाहती है जल्दी से शादी उसका कहना है कि आदमी ने शादी करनी होती हैं। आदमी से न कि उस से सम्बन्धित अच्छी या बुरी अफवाहों से ?........ ......

..... खैर.........क्या करे वह बिचारी भी शामा उसकी एक ही सन्तान और वही कमाऊ। अगर उसने उसके दिल को ठेस लगाई ना कि तो उसका बुढ़ापा सुख चैन से काटना मुशकिल

होगा। इसलिये उसने चुप रहना ही ठीक समझा।

एक दिन शामा दफ्तर से आकर सीधे रसोई में जाकर मां से बोलो "मामा डियर आज शाम को हम कोर्ट जायें गे।"

"किस लिये बेटी"

"रजिस्ट्रेशन के लिये"

"किस बात की"

अरे भोली मामा तुम भी नहीं समझोगी हम दोनों यानि मैं और औतार शादी की रजिस्ट्रेशन करें गे।

"लेकिन बेटी"

"देखो मामा मुझे जब पसन्द है तो भला तुम्हें खीज किस बात की?"

नहीं बेटी मुझे खीज कोई नहीं पर पहले तो सारा कुछ मालूम पड़े कौन है कहां का है क्या खानदान है और पहले शादी का क्या मामला रहा वह बीबी मरी तो कैसे।

तुम तो पुराण भजोगी मामा, इस सब से तो यूं time-waste करना हुआ। और यह सब बातें अर्थं तो नहीं रखती हमारे मामले में हमें खूबसूरत कमाऊ आदमी चाहिये सो यह है फिर और तो तुम बाद में भी पता लगा सकती हो।

"कहा से?"

"चाहो तो उन्हीं से या किसी और से"

"क्या री तेरे साथ पढ़ती थी ना वह काश्मोरी लड़की क्या नाम था उसका......गोरी......जो मिडल स्कूल की टीचर है वहीं ना।

"हां हां............उसको एडरेस भी मेरे पास है लेकिन यह भी सोचो अगर उसको इनके विषय में कुछ पत्ता न हो तो...

अच्छा अच्छा हो आओ तुम कोर्ट से जो ईश्वर को मन्ज़ूर होगा वही भला।

शामा तैयार होकर चली गई शादी करने नये रंग में जहां न बाजे बजते हैं और न ही लड्डू बंटते हैं। बल्कि जीवन रंग ज़रूर बदलता है चाहे धोखा हो या फीका, वह किस्मत रही।

दामाद के आने से मां के घर में नई चहल पहल और रौनक थी। उसे वे सब बातें भूल गई जो कभी वह सोचा करती थी।

उसका जमाही उसका विशेष आदर किया करता था। सुबह उठती तो आदर से प्रणाम और फिर प्रेम से नाशता इत्यादि इस प्रकार उसकी दिनचर्या चलती।

औतार और शामा दफ्तर चले जाते तो मां उनका कमरा झाडती उनके कपड़े धोती उनकी चीज़ें सम्भालती एक दिन कमरा झाडते-झाडते शामा की अलमारी से एक पर्चा कागज़ का निकल

आया, जो देखने पर किसी का एडरस लगता था, उसको पता न जाने क्या सूझी उसने किरायेदार की लड़की को बुला कर दिखाया वह गौरी टीचर का एडरेस था। बुढ़िया के दिल में विचार आया कि क्यों न उसे एक पत्र लिखा जाये। अतः शामा के आने पर उसने शामा से कहा......बेटी गौरी को तुम ने लिखा ही नहीं अपनी शादी के बारे में? वह तो तुम्हें बहुत चाहती है।

शामा को न जाने क्या प्रसन्नता अनुभव हुई। बोली... हां मां अभी लिखती हूं और यहां भी बुलाती हूं उसे क्यों ठीक रहे गा ना?

"बहुत अच्छा"

उसने बड़ी उमङ्ग से गौरी को पत्र लिखा।

प्रिय गौरी,

बहुत दिनों से तुम्हारी कोई खबर नहीं मिली क्या बात है। मां तुम्हारा कई बार पूछती है? मेरे लिये न सही लेकिन कम-अज़-कम उसी के लिये भाई पत्र का उतर तो दे दिया कर इससे पहले भी एक पत्र डाल चुकी थी, जिस में थोड़ी help मांगी थी तुमसे उन के बारे में जैसा कि अन्दाजा था कि तुम्हारी और उनकी एक ही जाति है। पर तुमने कोई जवाब नहीं दिया कौन जाने भई, तुम्हारे दार्शनिक मन में इस विवाह पर विरोध न कर दिया हो तो कदाचित इस लिये तुम चुप रही। खैर! अब तो पिछले महीने दस तारीख को शादी भी हुई। बहुत ही अच्छे

हैं वे सच मानो हमें तो जैसे नई ज़िन्दगी मिली है। माँ से ज्यादा मुझे और मुझ से अदिक माँ को। अब मां तुम्हें बुला रही है अब की छुट्टियों में ज़रूर आना।

पत्रोतर अवश्य देना पृतीक्षा है

तुम्हारी

शामा

इस पत्र को डाले भी लगभग एक महीना हुआ पर उसका उतर न आया। शामा और उसका घरवाला अपने कीयक्रम में व्यस्त थे और मां अपनी इस मूड में मग्न कि एक दिन शामा की डाक से डाकिया एक चिठ्ठी थमा गया शामा ने उसकी लिखावट पहचान कर झट लिफाफा खोला...यह गौरी का पत्रोतर था...वह मग्न हो कर पढ़ने लगी।

प्रिये शामा,

तुम्हारा पत्र मिला बधाई स्वीकार हो। तुम ने इससे पहले भी एक पत्र डाला था। फिर भी मैं तुम्हारी शादी पर ना आ सकी अथवा इतनी देर बाद तुम्हें पत्र लिखा इसका कारण क्या था कुछ समझ नहीं आता हाँ इतना अवश्य कहूंगी कि कहावत के आधार पर "सहज पक्के सो मीठा होय" मेरा ऐसा कहना ठीक ही है।

तुमने मुझसे अपने पहले पत्र में अपने "उनके" बारे में कुछ पता लगाने के लिये लिखा था सो जहां तक मुझे मालूम हुआ बहुत अच्छे हैं योग्य हैं और रसिक भी।

उनकी पहली बीबी के बारे में जैसा उन्होंने तुम से कहा है कि वह आवारा, बदसूरत और बदतमीज़ औरत थी ऐसा ठीक भी हो सकता है। पर एक सूचना उन्हों ने गलत दी है कि वह मरी है। सो मेरी बहन तुम स्वयं अनुमान लगा सकती हो कि मैं अभी मरी नहीं जीवित हूं।

गौरी

❀ पंछी उड़ गया ❀

लोगों का एक बड़ा जत्था अदालत के बाहर खड़ा था। सब लोगों को यही उत्कठा थी कि अपराधी को दिखाया जाये परन्त अपराधी बहुत ही डीठ कि वह किसो को भी देखना नहीं चाहता यहां तक कि अपने रिश्तेदारों को भो नहीं। ऐसा क्यों ? यह उसका परमत्मा जाने।

कहा जाता है कि इस अपराधी पर तीन-तीन खूनों का दावा है और उस पर आश्चर्य यह कि अपराधी सभी बातों का इकबाल करते हैं और उस बारे में अपनी कोई सफाई नहीं देना चाहता क्यों ? कुछ समझ नहीं आता। वैसे सेनानी तो ऐसे ही हुआ करते हैं। इनको ज़िन्दगी भी उतनी ही सस्ती और बे कीमत लगती जितनी कि किसी अन्य की। होना भी चाहिये ऐसा क्योंकि रणभूमि में जाकर देश शब्द की रक्षा के लिये यही लोग तो होते हैं जो मूली गाजर की तरह कटते हैं और कटवाते हैं। फिर मौत तो इनकी सची चेरी सभी कुछ है तो उसके विकराल जबडो से क्या डर।

कहा जाता है : "लड़ते-लड़ते मरे सिपाही और नाम रहे कप्तान का" वह तो बहुत ही बड़ी कुर्बानी हुई। और फिर वही सिपाही अपनी छोटी सी ज़िन्दगी का ही मोह क्यो रखे ? जज

साहब ने उसके मुकद्दमे की पैरवी की और आज उसको मिल गया फैसला क्या ? सजाये मौत यानि.........फाँसी ।

अदालत में बैठी जनता एक बारगी हो सिहर उठी पर उस नौजवान को जेसे यह शब्द भी ज़ेसे पूर्वपरिचित ही थे, अतः विचलित न हुआ बड़ा ही धीर हो वह सब लोगों के मुख के भाव देख रहा था । उसके भाई इस विषय में कुछ कहना चाहते थे तो उसने अनायास ही इन्कार कर दिया । कोई एक हफ्ता बाद इस को फांसी दी जाये गी दिन चढ़ने से पहले इसके जीवन का दीपक बुझा दिया जाये गा । सोचकर सबकी आंखों में अश्रु से आये पर वह हिमगिरी जैसा शाँत और स्थिर फैसला सुनकर सिपाहियों के साथ चला गया ।

क्या उसको अपने जीवन से मोह ना था ? क्या उसको कोई आशा नही थी कि उसको बचाया भी जा सकता है ! कौन कहे, उसको अपनी ज़िन्दगी भी प्यारी थी और यह भी आशा थी कि कोई उसको बचायेगा पर वह...वह तो ज़िन्दगी से बेज़ार था ।

जज फैसला देकर तो घर आया पर उसके पैर भारी हो रहे थे सिर चकरा रहा था । उसके दिलो दिमाग में सिर्फ यही बात गूंज रही थी कि अपराधी की उमर तो अभी कुल 14 साल थी, उसको लगता कि उससे फैसला गलत हुआ । उसने कानून की आड में एक अलमस्त जवानी को खत्म करने की कोशिश की है । उसकी कुर्सी का दूसरा नाम इन्साफ है । क्या उसने इन्साफ किया नहीं । पर वह कर भी क्या सकता था जब कि उसके

प्रमाण अकाट्य थे। उसके बारे में न कोई कुछ बोला ही और न उसने किसी को बोलने ही दिया। फिर उसको फैसला तो देना ही था.........क्या वह उमर कैद की सजा न दे सकता था। जिससे उसकी इस छोटी सी ज़िन्दगी को किसी भले काम पर लगा कर सुधारा भी तो जा सकता था। उसने अनयाये किया। अब दुबारा तो फैसला नहीं दे सकता दुबारा तो कलम तोड नहीं सकता पर.........यह फैसला तो तभी सम्भव है, जब कि उसका कसूर इतना गम्भीर न होता.........

यह हफ्ता भर जज भी अपने फैसले के लिये तिल मिलाया। सो न सका पर मुहं से निकली बात कानून में वापिस नहीं आ सकती।

आज 'रघू' को फांसी लगनी है ये सोने से पहले ही जज का दिल थोडी देर के लिये कांप गया वह सो न सका। उसी वक्त पोलीस स्टेशन पहुचा। रघू के बारे में पूछा तो पता चला कि दो तीन दिन से धूप और अगरबती मंगवा के अपनी पूजा में मस्त रहता है। उसकी कोठरी के सामने पहुच कर वह हैरान रह गया कि इस घोर अन्धकार में भी "रघू" ने जज को पहचान लिया था।

तभी वह बोला..."नमस्कार जज साहब ! क्या वक्त हो गया है।"

"नहीं अभी 12 बजे है।"

"तो कब वक़्त होगा ?"

"सुबह साडे पांच बजे।

"अच्छा" कह कर वह अपने में खो गया जज ने सोचा थोडा स्वालनामां दूं वेचारा मरे जा रहा है। सो कहा रघू तुम अब भी बच सकते हो अगर किसी की सफाई ले लोगे।

बह कैसे ?

तुम्हारे भाई लोग तो तुम्हें बचा सकते हैं और फिर सारी जनता तुम्हारे हक में हैं और ....

नही... जज साहब नहीं। इधर यह बात नही होती। इन्साफ के नाम को बदनाम मत करो। कल तुम भी और तुम्हारा इन्साफ भी झूठा कहलायेगा कोई तुम्हारी इस तरह की बातों का किसी पर असर नहीं होगा। यह ऐसे ही चलता है घोरखधन्धा चलने दो इसको रुकाने से बाड़ आये गी, और सारी दुनिया उस में बह जायेगी, तबाह हो जायेगी, फिर उस तबाही को कोई भी रोक नही सकेगा ....

एक ज़िन्दगी केलिये कानून को झूठा मत करो। मत करो अपने कर्तव्य का खण्डन। जज ! तुम्हारे से गले मिलने को जी करता हैं।

'जरूर मिलो !'

" तुम्हें लग जाये गी मेरी बेडियां ढोली करवा दो।

भाग न जा गा। "

जज को उस पर काफी दया आई उसने वैसा करवा दिया और रघू से गले मिल गया। फिर रघू बोला......"जज साहब ! कल इस वक्त आपको यह सिर दर्द खत्म हुआ होगा है ना "

"क्या तुम्हें अपनी ज़िन्दगी से प्यार नहीं।"

" था अब नहीं "

" ऐसा क्यों ? "

" जज साहब ऐसी कई बातें होती हैं जो बताई नही जाती। "

पर अपनी जान केलिए आदमी तो कुछ भी कर सकता है अभी बतादों शायद तुम्हारी जान बच जाये बतादो रघू बतादो।

" जज मैं एक सिपाही हूं मैंने मुशकिलों से जूझना सीखा है बचना नहीं। मुझे किसी का सहारा नही चाहिये। ऐसी ज़िन्दगी को लानत है जज साहिब जो किसी के रहम से मिली हो मैं भीख लेना सीखा नही हूं और न लेने लगा। "

" मालूम होता है तुम्हें दुनिया से नफरत है। ऐसा क्यों तुम बताते क्यों नहीं।"

जज ने रघू को झकझोर दिया पर रघू ने बात को पलट दिया......

"आज आप से गले मिलकर बड़ी देर बाद मुझे शांति

मिलेगी। ऐसा लगा जैसे मैं किसी आत्मीय से मिल रहा हूं। अजीब संयोग है जज साहब प्यार की अजीब आकिषना नहीं तो कहां आप और कहां मैं! एक घोर अपराधी।

जज से इस बात का कोई उतर न बन पड़ा वह आश्चर्य से केवल उसे देख रहा था कि रघू ने कहा.....क्या हाथ मुहं धोने को इज़ाज़त है ज़रा प्रभु को सच्चे दिल से याद करता।

"ज़रूर क्यों नहीं" इतना कहकर जज ने पोलीस के सिपाहियों से इन्तिजाम करवाके अपने आफिस की राह ली। उसे रह रह कर इस अजीब से अपराधी पर विचार आता। अब तक तो जितने भी अपराधी फांसी की सजा के लिये आते तो वक्त आने तक को बराबर अपनी जान की बख्शीश मांगते हुये रोते चीखते पर एक यह देखा कि अपनी ही जिन्दगी से खार खाये बैठा है। क्या ? जज को बरावर बेचैनी होती जाती थी। उसकी भोली सूरत याद करते। उसकी शक्ल से तो लगता है कि वह एक च्यूंटी भी मार नहीं सकता पर रिर्पोट को क्या करे। वह भी स्वंम इकबाल करता है। उसके अद्भभ्य साहस को देखकर जी चाहता है कि उसको किसी तरह बचा लिया जाये। पर किया भी क्या जाये। वह तो खुद भी बचना नहीं चाहता।

दीवार पर लगे क्लाक ने पांच बजाये, ज़ज साहव का फिर से ख्याल आया कि देखे रघू क्या करता। वह गये तो देखा वह एक भले आदमी की तरह आंखे मूंदे दीप जलाये मीठे गले से कुछ गुनगुना रहा था। उस का मानव हृदय शायद सन्तप्त था।

अतः आवाज़ थरथरा रही थी। जज़ की समझ में कुछ न आया वह सिफ देखते रहे और रघू गा रहा था।......

"प्रभू तुमसे क्या छिपाना तुम हो अन्तरयामी"
इस टूटे हुये दिल को धैर्य बन्धा दो तुम हो सबके स्वामी।

यह दो शब्द गाने के बाद उसका कण्ठ इतना अपरुध हुआ कि वह सिवाय आंसू बहाने के कुछ और न कर सका बच्चों की तरह फूट-फूट कर रो पडा वहां और बहुत देर तक रोने के बाद उसने टूटे शब्दों को जोडते हुये कहा......

प्रभु जैसा तुम ज़ानते हो मैं ने कोई अपराध नहीं किया है प्रभा ने अपनी अस्मत बचाने के लिये जो मेरी पिस्टल से काम लिया तो एक भाई होने के नाते मैं ने यह सारा दोष अपने पर लिया। दुनिया जानती है कि मैं एक ज़मीनदार का बेटा हूं। पर मुझे पूरी तरह याद है कि एक मेले में ज़मीनदार ने मुझ पर दया करके मुझ खोये हुये को अपना लिया था, क्योंकि उसका अपना कोई बेटा नहीं था और उसके घरवालों ने उसके इस काम को सराहा नहीं और के मरने के बाद मुझे साला ने जितना हो सका तंग करना शरू कर दिया। जिसके फलस्वरूप में मिलट्री में भरती हो गया। उस घर में मेरा सिपाही बनने का किसी को भी बुरा नहीं लगा केवल एक प्रभा थी जिसने मुझे अपना भाई माना था। उसी के पत्र बराबर मुझे मिला करते थे......

अब चाहे जो भी हो। अब तो अपराध की सजा भी मुझे मिली है पर ! यह दिल कभी कमज़ोर पडता है, कभी दिल सज़ा

लेने की तमन्ना जाग पड़ती है । मुझे धैर्य दो प्रभु नही तो सब खेल बिगड़ जायेगा । इतना कहने के बाद रघू ने घुटने सिकोड कर माथा टेक लिया । जज ने सब सुन लिया था और उनकी सारी मनुष्यता आकर ललकारने सी लगी एक निदोष फाँसी लग रहा था उसे बचाओ नहीं तो तुम्हारा इन्साफ नापाक हसरतों का शिकार होगा । तुम्हारी कुर्सी डावाँडोल होगी और तुम......तुम......गिर जाओगे पर अन्तरात्मा की इस पुकार पर उसकी बुद्धि उसे झट उत्तर देती........ पर कानून महज़ एक मानसिक उलझाव को ही बढ़ावा नही देगी और न रधू छूटेगा, क्योंकि साबित हो चुका है कि इसने एक नही दो खून किये थे । फिर........................

फिर..... क्या किया जाये.........

इतने में उनकी नज़र घड़ी पर पड़ी जो साडे पांच बजाने में सिफ पांच मिन्ट का वास्ता रखती थी । उन्होंने धीरे से अवरुध कण्ठ से पुकारा......रघू जी ।

चलो अब समय आ गया ।

ठीक है चलिये ।

एक बात पूछूं !

पूछिये !

बड़े लोगों को देखा पर अपनी ज़िन्दगी से नफरत करते हुए केवल एक ही देखा और वह तुम हो भला ऐसा क्यों ?

"हम तो सिपाही हैं जज साहिब हमारी ज़िन्दगी का कोई ठिकाना नहीं आज हैं तो कल नहीं। यहां तो फिर भी लाश को किसी ढ़ंग से जलाया तो जाये गा पर रणभूमि में मरते तो चीलें और गिदे हमारे शरीर का स्वागत करती हैं। इसके इलावा जज साहब यह सब से बड़ी खुशक़िस्मती है कि मरते वक्त कम-अज़-कम ईश्वर का नाम तो ले सकू गा।

इसी तरह वह बड़े ही शांत ढ़ंग से फांसी के तख्ते पर आ गया जैसे ससुराल जा रहा है वखत होने लगा था सो उसे पूछा गया ....

"अपराधी तुम्हारी आखरी ख्वाहिश क्या है?" 'हु' उस ने सोते से जैसे आंखे खोल दी। अभी-अभी नहाया नौजवान प्रभात की पहली किरण को मांत देरहा था पर नश्वरता इस सुन्दरता को कहां रखने देगी। उसने आंखे खोली और अपनी कमीज़ की जेब में पड़े कागज़ की ओर संकेत किया, और बोला ...
......जज साहिब आपने कई दफा मुझ से पूछा मेरी ज़िन्दगी के बारे में सो जैसे हो सका सब लिख चुका हूं। क्योंकि कई बातें बोलनी नहीं होती। पर मेरी आखरी ख्वाहिश है कि इसे मेरे मरने के बाद ही पढ़ा जाये पहले नहीं। रही मेरी लाश की बात सो कृपा करके यहीं इसे जलाया जाये मेरे किसी भी सम्बन्धी के के हवाले न किया जाये।

"अच्छा नमस्कार" उसने आंखें मीच ली......दो बड़ी-बड़ी मोती उसकी बन्द आंखों से कपोलो पर लुढ़क पड़े।

समय हो गया तख्ता खिसका दिया गया और हल्की सी चीख के साथ रघू को जान हवा हो गई। पंछी उड गया, उसके सम्बन्धी आये पर उसकी लाश नहीं दी गई। उससे प्राप्त हुई चिट्ठी जज साहब को दी गई। उस में लिखा था.........

जज साहब, "आज में आपको एक अजीब बात बताने वाला हूं। बात यह है कि असल में मैं ने कोई हत्या या पाप नहीं किया है। यह सब क्यों और कैसे हुआ सो बताता हूं 'प्रभा" एक लावारिस लडकी जो मुझे भाई मानती थी उसके पीछे हमारी बटालियन के दो जवान लगे उसने अपनी असमत बचाने केलिये उन पर गोली चलाई निशाना अचूक था और वे दोनों मर गये। मैं कमरे में सोया था। मैंने गोली की आवाज़ सुनी और जाग पड़ा। साथ ही सारा मामला समझ में आया। क्योंकि इस बारे में मुझे पहले ही शक था। मैंने प्रभा को भगाया और पिस्टल हाथ में ले कर जानबूझ कर शोर मचाने लगा शोर हुआ और मुझे पकड़ कर लिया गया और घरवालों को पता दिया गया तो उन्होंने भी मेरे विरोध में हो बयान दिये क्योंकि वह मेरे सगे न थे। मैं कौन हूं सो बाद में बताऊँ गा। इस तरह मेरा केस इधर सिवल अदालत में पहुंच गया। मुझें जब पता चला कि यहां के जज आप हैं तो मुझे बड़ी खुशी हुई क्योंकि मैंने सुन रखा था कि मंगल राम जमी-दार का बेटा रामकृष्ण जज बना है सो आप हैं। मेरा असली नाम रघू नही 'रत्न' था। पर मेले में खो जाने के बाद इस बे-औलाद

जमोदार ने मेरा नाम रघूनाथ रखा था पर इस जमीदार के मरने के बाद मैं सिपाही बन गया। इसलिये मैंने आपसे गले मिलना चाहा अगर जोना चाहाता तो जी भी सकता पर भैया रघू राजपूत का बेटा है सो अपने भैया के इतने बड़े नाम के साथ यह अपराधी शोभा नही देता। जा रहा हूं हो सके तो मेरी बातें भूल जाना।

रत्तो !

पत्र पढ़कर जज साहब की चीख निकल गई। उनके सामने वह दिन आये जब कि उनका भाई रतन मेले में खो गया था और बहुत ढ़ूढ़ने पर भी न मिला था।

❀ सुबह का भूला ❀

कालेज में उसको देखते ही जैसे मेरे तन बदन में ईर्षा की आग सी लग गई। मुझे उसकी वह सारी हरकतें याद आई एक के बाद एक। मैं सोचने लगी-कितना अजीब है यह आदमी भी अब तक की ज़िन्दगी में उसने शायद ही ऐसा कार्य किया हो जिस को देख कर कहा जाये कि उसने कोई भला किया हो कल तक जो मैंने उसको धोखा धड़ी जुए बाज़ी झूठ और चापलूसी ही करते देखा है तो आज यह परिवर्तन कैसा। अब तो वह देश सेवक बन गया है। भारत का दुःख और दरिद्रता को दूर कहने बाला जवान खूब लम्बा तगडा चौडा माथा चौड़ी छाती अहा उस वर्दी में कैसा लग रहा था। मगर जिस छाती में अभी तक केवल रंग और श्रंगार ने वास किया है।

गोलियों का मुकाबिला कर सकती है।

नहीं मैं कभी भी विश्वास नहीं कर सकती थी कि वह अपने को.........

वह तो मुझे उसी दिन प्रोफेसर रहमान से पता चला वे कहते रहे थे..... मु० अल्ली हां..... एक ऐसा देशभक्त जवान बन पाया है इस काश्मीर से कि हमें इसकी दिलोजान से इज़्ज़त करनी चाहिये। पिछले पांच सितम्बर की लड़ाई में मुहम्मद अल्ली भी छम्भ ज़ोरियों में सिपाही के रूप में काम कर रहा था देखिये आप

भी उनसे आटोग्राफ ले सकते हैं यहां तो हमारी काश्मीर वादी के काबिल तरीफ सिपाही हैं इनको कई गोलिया लग चुकी है, जिनके भारी निशान इनके जिस्म पर गवाह हैं। जब मैं ने यह सारी कहानी सुनी उसकी तो मैं सकते में आ गई। कुछ हैरान सी और कुछ परेशान सी में सोचने लगी......तो फिर हज़रत की ज़िन्दगी ने पलटा खाया है चलो अच्छा हुआ कम-अज़-कम ऐसी मस्त जवानी तो किसी अच्छे काम तो आये गी कभो।

जिस-जिस भी विद्यार्थी ने मुहम्मद अल्ली की बहादुरी सुनो उनका दिल श्रद्धा से भर गया।

कि मुझे कतई भी श्रद्धा न हुई। यह सब सुनकर यद्यपि मैं हैरान अवश्य हुई पर प्रभावित नहीं। सारे विद्यार्थी लड़के लड़कियां आटोग्राफ लेने उसकी और झपट पड़े, पर मुझे इस चीज़ का कोई उत्साह न था। सर्दी से छुटकार पाने के लिये मैं बुखारी के आगे बैठी। काश्मीर वादी की सर्दी इस बार दिस्मबर में भी असहनीय थी. गोया मुझे इसे कोई सरोकार तो था नहीं लेकिन फिर भी बीचों बीच मेरी नज़र बराबर उसको देखती जा रही थो शायद इसी हैरानी को दूर करने के लिये कि देश प्यार ने कल के नामी लफङ्गें को कितना महान् बनाया, और साथ ही में इस बात पर भी ध्यान बराबर दे रही थी कि उसकी नज़रें सिर्फ मुझे घूरे जा रही थी। शायद पहचान गया होगा कि मैं उसकी दिल्ली की जिन्दगी को बखूबी जानती हूं। उसको यह भी याद आया होगा कि मैं ने भरे चोराहे पर उसको पीटा और पिटवाया था।

खैर। मैं अपनी अलमास में थी और शायद यह अपने व्यतीत अतीत का ...... बुन रहा होगा कौन जाने।

शाम के कोई छे; बजे समारोह समाप्त हुआ तो में भी अपने घर की ओर चल पड़ी। आप तो जातते हैं काश्मीर में यद्यपि बहुत उन्नात हुई है फिर भी हम ग्रांमीन लोग सडक के होते हुये भी सडक की पगडडियों पर चलना बड़ा पसन्द करते हैं। तो लीजिये में भी पगडडीं को ही उबड-खाबड रास्ते से घर की और चल पड़ी, मेरा घर कालेज से लग-भग दो ढाई मील को दूरी पर है। यहीं में अपनी बड़ी नानी जी के साथ रहती हूं। रोज़ इसी राह कालेज जाती हूं और इसी राह वापिस आती हूं परन्तु उस दिन तो बात दूसरी ही थी। एक तो मेरा दिल पहले ही ना जाने कैसा हो रहा था और यह पहली दफा थी। जब में इतनी देर से घर लौट रही थी। मन में दुःहिचन्ताये और चेहरे पर हवायें उड रही थी। ना जाने देदी क्या सोच रही होगी।

अन्धेरा फैलने लगा, दिल में एक डर सा घर कर गया था रह रह कर कम्बरल दिल धड़कता था, मैंने इधर उधर चोर नज़रों से जैसे देखा तो अपने पीछे एक छाया भी आते देख कुछ तो अकेलेपन के कारण कुछ आखस्त हुई और कुछ शक्ति भी ना जाने क्यो ....

शाम की सर्दी ज़ोरों पह होती है सो सर्दी भी अपनी जवानी पर आई और अन्धेरा भी घना हुआ जा रहा था।

बचपन से ही मैं बहुत निडर थी सो उस वक्त भी डरी कोई नहीं हां इतना अवश्य है कि परिस्थिति और वातावरण ने

मुझे एक तरह से कहिये......जकड सा रखा था। मेरी हालत तो अजीब थी ......तब भी मुशकिल और ना भाग तब भी मुशकिल। दिल में सौ तरह के सवाल उठते और फिर यहीं दब जाते और कदम गिरते फिसलते आगे बढ़े जा रहे थे। चलते २ सामने एक नाला आता था पर उस दिन की पड़ी बारिष के कारण उसकी चट्टाने फिसलने वाली बन गई थी। यद्यपि बड़ी दूर से ही में उसके इस पार जांने की राह सोच रही थी... यद्यपि समाधान कोई नहीं मिल पा रहा था। जब मैं इस नाले के समीप पहुंची तो हताश हो नीचे बैठ कर अपनी बेबसी पर रोई कोई सहारा नही कोई साथी नहीं अजीब राह और अन्धरे का साम्रज्य कई बार अपने को इस राह से आने पर कोसने लगी ....पर अब होता क्या जो होना था हो चुका था .... मन ही मन में निश्चय किया अभी कोई न कोई ग्रामीण इधर से तो आ गुजरे गा सो उसी से थोडा सहारा ले कर मैं भी पार हो जाऊगी। बड़ी इन्तजार के बाद पहले दो बटोही आये वे दोनों ही जल्दी और अपने काम में इतने मस्त थे कि मेरी कोई पुकार उन तक न जा सकी। अपनी दूसरी बार की असफलता पर मैं फूट-फूट कर रोई, तभी इसी और फिर आहट हुई एक आदमी की छाया मात्र के अतिरिक्त और कुछ न समझ सकी मैं। यह आदमी नशे में चूर कभी इधर गिरता तो कभी उधर गिरता चला आ रहा था। मैंने कोई और रास्ता खुला न देखकर सहारे के लिये उसी को आवाज दी......ऐ मि० ज़रा हमको भी पार जाने तक सहारा दो।

आदमी बोला .....बड़ीं खुशी से मेरे धन भाग। आईये आवाज़ मुझे पहचानी सी लगी पर यह न निश्चय कर पाई कि

किसकी होगी। खैर उस वक्त तो मैं बहुत खुश हो उठी तो उस आदमो ने बड़ी ही शान से मेरा बाज़ू थाम लिया और हम चट्टान पर पेर जमा २ कर फिर चलने लगे फिसलन इतनी अधिक थी कि मैं कई दफा उनका सन्तेलन खो चुकी और यह आदमी मुझे सम्भालता रहा, पूरा उसी तरह जैसे कोई छोटी लड़की शौक और कोतुक से गुडिया को बाहों में समेट लेती हैं। अजीब सा वातावरण था उस वक्त भी पर मजबूरी आदमी को वहशियत को बेबस खिलोना बना देती है। वह आदमी सहारे के दया के रूप अपनी मनमानी भी बहुत करने लगा था और मैं मज़बूर उसको किसी भी हरकत के लिये मना नही कर सकती थी। इस तरह चलते २ मैंने अपने अन्तदुन्द के साथ आधा नाला पार कर लिया अब बहुत कम रह गया था और धीरे २ रोशनी भी दिखने में आने लगी थी, गांव के लैंम्प पोस्ट भो।

अब की बार एक बड़ी सी चटान पर चलना था जिस पर हरी हरी काई उग आई थी। फिसलते हद से ज्यादा पैर जम ही नही रहे थे। उस पर जब मेरी यह हालत उस आदमी ने देखी तो मुझे बड़ी ही मीठी जबान में बोला ...देखिये अगर आप को बुरा न महसूस हो तो आपको गोद में उठाकर पार हो जाऊँ। मैं सुनकर सहम सी गई। मैंने डरकर उसकी और देखा तो मैं अवाक रह गई क्योंकि यह आदमी तो वही कालेज बाला सिपाही था, जब मैंने देखा था उसकी ओर तो वह मुस्करा कर रह गया और कुछ ठहर कर बोल भी पडा...भला आपने मुझे तो पहचाना होगा........

' जी, बहुत अच्छी तरह से।"

मैंने घृणा से जवाब दिया। इतनी सारी दुनिया में केवल 'जवानी' को लोग मानते हैं, आदर करते हैं, अपनी कीमती से कीमती चीज़ भैंट देते हैं पर एक आप हैं जिनके पास प्यार के दो बोल भी नहीं मेरा इतना हो सुनना था कि न जाने क्या जोर लगा कर एक ऐसा धक्का मारा कि वह लडखडा कर दूर पानी की गहरी धारा में गिर पडा। उसके सिर में मामूली सी चोट आने पर खून निकलने लगा था यह देखकर एकदम अपनी हिम्मत से मेंने जैसे नाला पार किया और घर भाग गई।

घर में देदी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। खाना खाकर हम सोने ही जा रहे थे, कि आंगन में धडाम की आवाज आई। हम दोनों बाहर आकर देखने लगे देख कर घबराहट और हैरानी से मेरा बुरा हाल हुआ क्योंकि यह तो वही जवान था भारत भाई का हाल जो अल सर्दी गीले कपड़े और सिर की चोट से बेहोश पड़ा सुन हो चुका था देदी ने हाथ लगाया तो बोली......हे राम यह तो बेचारा सडा हुआ जा रहा है इसको बचाना होगा तो हम दोनों ने उसके गीले कपड़े किसी तरह से निकाल कर बदल दिये और गर्म बिस्तर में लिटा दिया। इतना काम करने में हमें करीब आधी रात तक हो चुकी थी, नानी जो तो थे बूढे, सो वह चली गई अपने कमरे में यह कहकर बेटा बुखारी गर्म करके तुम भी सो जाना में चली।

मैंने बुखारी गर्म कर दी, तब भी उसके शरीर में कोई गर्मी न हुई मैं घबरा गई। मेरे दिल में बार बार विचार आया कि मैंने एक जवान को मौत करदी है में हत्यारिणी हूं तभी मेरे अन्दर

की ... जाग पड़ी मैंने हिम्मत से निश्चय किया चाहे जैसे भी हो मैंने भारत मां के जवान की प्राण की रक्षा करनी है । मैं उठी उस की पलग के सरहाने बेठ कर अपनी गर्म हथेली उसके माथे पर रख दी । थोड़ी देर बाद मुझे महसूस हुआ कि स्वंय से इसको गर्मी आ सकती है, तो अपनी चुन्नी नीचे छोड़ कर उसके बिस्तर में धुस पड़ी धीरे २ मुझै ज्यादा गर्मी लगी मैंने एक २ करके कपड़े उतार दिये चिपट गई । बड़ी देर के बाद उसने आंख खोली .. तो मैंने पूछा ... अब कैसा है जी ।

उतर में उसने केवल थोड़ा सा मुस्करा दिया और सिर को मेरी कसी हुई दकड में छुपा दिया ।।

❀ लक्ष्यहीन ❀

इस मोठो सी धूप ने ना जाने कौन सा जादू कर दिया था, उसकी एक २ रग पर। वह रह २ कर पागलों की तरह अपने लम्बे २ काले बाल खोल देती और फिर अपनी हथेलियों में उनको लेकर प्यार करती पुचकारती ना ज़ाने क्यों ? किस अधूरो कल्पना को पूर्ण कर रही थी। उसकी यह बचगाना हरकतें ! ऐसा लगता था कि जैसे उसको यह बाल कोई अतुल धनराशि रूप मिल गये हैं कितनो प्यारी थो उसको कोशिशें और कितना प्यारा था उसका स्वस्थ गौरा २ मुँह। कौन न कुरबान हो ऐसी प्यारी सूरत और भोलो मुस्कान पर।

कहने को वह तो युवती कहलाये गी ही पर है अभी किशोरी कमसिन। गोरा गोरा गाल सा मुखड़ा लम्बी लम्बी और गहरी काली ज़ुल्फें। अभी तो वह विस्तर पर से उठी ही थी। क्योंकि छुट्टी का दिन था और सात दिनों के बेमरौवत काम के बाद यहो तो आता एक दिन जिस दिन वह अपनी तथा अपनी वस्तुओं की खातिर करती है नहीं तो रोज़ दफ्तर टाइम पर जो मिला खालिया जैसे तैसे चलते बने पर! यह तो छुट्टों का दिन है। बिल्कुल स्वतन्त्र और शांत।

सो छुट्टा को ध्यान में रखकर ही वह दिन के बाराह बजे ब्रश कर रही थी। इधर कई दिनों से लगातार मौसम रो रहा था,

खुल कर नहीं अपितु सिसकियों में। कभी बारिश बन्द होती तो कभी फिर अपना मॉर्च पास्ट आरम्भ कर देती। यह वर्षा तो अपने साथ मौत की सी खामोशी ही नहीं लायी बल्कि एक तरह का चलायन भी। इसी बारिष ने तो पिछले कई दिनों से उसको भी दफ्तर के इलावा कहीं भी बाहर नहीं जाने दिया इसी लिये तो शायद वह इस धूप में अपने को नहला रही थी मचल-मचल कर और कूद-कूद कर.

इसी धुन में उसने मां को आवाज दी मां! ज़रा कुर्सी पकड़ा दो। परन्तु दूसरे ही क्षण ख्याल आया कि मैं ने क्या कर दिया नहीं मैं स्वयं ही लाऊंगी और वह उठी ही थी कि मां ने कुर्सी ला कर बरामदे में डाल दी। मस्त सी बुल-बुल को वह चहक उठी..... "माँ! आज होलिडे है। मेरी अच्छी सी मां ज़रा तेल तो लगा दो बालों में।

मां ने थुप्पी भर कर बालों में तेल लगाना शरू कर दिया चचल आखिर अपनी उस चचल प्रकृति से लाचार थी तो उसने इस गम्भीरतां आवरण को तोडा।

मां! जब भी देखती हूं तुम चुप हो। जब भी तुम से बात करती हूं तुम ना जाने किस जहाँन में खो जाती हो आखिर हुआ है तो क्या जो हमेशा चुप रहती हो। किस बात पर तुम्हारे बहते आंसू तक सूख गये हैं तुम हमेशा एक आग दिल में लिये फिर रही हो। तुम बाहिर क्यों नहो निकलती इस आग से क्यों अपने को खत्म कर रही हो गीली लकड़ी की तरह सुलग-सुलग कर।

मां ! तुमने अपनी मनवता खो दी है। तुम मनुष्य नही मशीन हो मशीन। तुमने अपनी ज़िन्दगी में अधिक पैसे को जाना है। और उन पैसों से भी अधिक तुम्हारा जोवन यन्त्रवत स्थिर है कर्तव्य की परिधि में। यह ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी है मा। आदमी कमाता है अपनी ज़रूरतों को सुविधा से पुरा करने के लिये अपनी जिन्दगी आज़ाद और खुशहाल बनाने के लिये न कि नौकरी के चक्कर में पडकर तुम्हारी तरह अपना जोवन मशीन बनाकर।

पहले भी मैंने तुम से यही कुछ पूछा था ! तो तुमने एक बात कह कर कि तुम्हें किसी बात के लायक बनाकर मुझें नौकरी की आवश्कता नहीं" टाला था, परन्तु आज उन सब के लिये तुम्हारे पास क्या जवाब है मां ! बोलो ना।

मां चुप चाप चंचल की बातें सुन रही थी, पर चुप रहने पर भी उसकी अपनी आंखें अविरल धारा बहाये जा रही थीं। वह लडकी को क्या समझाती कि जीवन यह चंचल मुस्कान या मस्त यौवन की डगमगाती डगर नहीं बल्कि ठोस, कठिन और कुस्म सत्य है जिसको टाला नहीं जा सकता। होनी होकर रहती है फिर भी उस होनी की जलन भुलाई नहीं जाती इस सब की कसक उसके दिल में रही। एक टीस उठी और उठ कर वहीं दब गई। उसके अनुभवो से फटे र्शीष दिल में। वह केवल इतना कहकर चुप हुई" बेटी मनुष्य की कर्तव्य परायणता, ही उसकी मनः स्थिति का उत्थान है।

पर चंचल की समझ में इसका कोई असर न हुआ वह

बोली। यह रहस्य, मेरी मां। मैं समझती नहीं। मैंने सीधे से पूछा है, तुम भी सीधे से जवाब दो"

मां यह सब सुन कर अचकचा कर रह गई पर उतर देना तो ज़रूरी था सो बोली . .. बेटी इस दुनिया के कई रूप है कभी मित्र होते हैं तो कभी शत्रु यही दुनिया और उसी जाल में से मनुष्य को गुज़रना पडता है। क्योंकि समाज में मनुष्य जन्म लेता है और समाजिक सम्पर्क ही उसका जीवन है। आज मान लिया, तुम्हारो अपनी समाज से विच्छेद तो अकेले तुम कुछ कर सकोगी ? नहीं कदापि नहीं क्योंकि तुम्हें आवश्यकता है समाज की अगश नहीं अपितु उसके सहयोग की। बिना सामाजिक स्तर के न तुम्हारा उत्थान होगा न पतन तुम्हारी हरएक चेष्टा सीमित रहेगी और स्थाई रहेगी।

"मैं उन्नति करूँगी तो अपने आप अवनति होगो तो मेरो अपनी अपनो दुष्प्रयत्नों की प्राक्रिया होगी। इसमें समाज़ आया तो कैसे ? बीच ही चंचल ने चंचलता प्रकट कर दी।

"नहीं ! यह बात समझना इतना आसान नहीं जितना तुम समझती हो, इसको समझाने केलिये तुम्हारे पास एक ही उदाहरण है, जैसे कहा जाता है कि रचना को सुदृढ़ और निष्पक्ष आलोचना उसकी आत्मा है प्रश्वरता है और आधार रूप सुन्दरता है। तुमने अक्छा काम किया तो जब तक तुम्हें उसको भास कराने वाला अन्य कोई न मिले तुम्हें उसकी वास्तविकता मालूम नहीं होगी। तुम बुरा काम करोगी उसका आभास तुम्हें मां

नहीं अपितु तुम्हारा समाज देगी जो तुम्हारी होनी और अनहोनी में आंखें फाड़े प्रतीक्षा करती है............

"अपनी बुराई भलाई क्या आदमी .... समझने वाला नहीं। क्या में इतनी बच्ची हूं कि अपना भला बुरा भी न समझ पाऊं। मां क्या ऊलझलूल बातें करती हो। "नाराज़गी . ... के स्वर में चंचल बोली।

नहीं बेटी ! तुम ने फिर समझने में भूल कर दी वास्तव में मनुष्य कोई गलती नहीं करता। जो कुछ करता है अपनी हित और भलाई के लिये करता है तो इससे दूसरे का हित हुआ या अनहित। इतनी उतनी उसकी स्वार्थ बुदि नहीं जान पाती जब तक कि उसमें किसी ओर की प्रतिस्पर्धा न हो। यह स्वाथ उसके समक्ष आता ही नहीं और कई काम ऐसे भी होते हैं जो बाद में चल कर एक भूल ही नहीं अपितु एक ऐसां भूचाल सिद्ध होते हैं जिससे समूचे जीवनकी बुनियाद ही हिल जाती है इतना ही नहीं बल्कि यह कभी बड़ी ही विकट समस्या बन जाती है और जिसको मज़बूर और भारी हृदय से सहना पड़ता है। परन्तु हम इस सब केलिये तैयार नही होते। उस समय मनुष्य रोता है गिड़गिड़ाता है, परन्तु होनी हो़कर रहती है। उसे अपने सारे स्वाथ अपने पर हंसते दिखाई देते हैं पश्चाताप की धीमी सी सुलगती रोशनी मेरे पर व्यंथ क्योंकि गया हुआ समय वापिस तो आता नही इसलिये मनुष्य का हर समय अपने कर्तव्य की परीधि में रहकर काम करना चाहिये। जित से उसका भला हो और उससे सम्बन्धित औरों की तो यह बात है माँ

क्या इसी लिये तुम्हारा जीवन मशीन बन गया है। कि अमुक समय पर खराद घुमा दिया और मशीन चल पड़ी। क्या कर्तव्य के अतिरिक्त जीवन में कोई गीरमा कोई और पहलू नहीं। क्या इतनो बड़ी दुनिया में आदमी केवल एक कर्तव्य के सहारे ही जियेगा। उसके अरमान उसकी हसरतें, उसकी आशायें और अभिलाशायें क्या कोई कीमत नहीं रखती अपनी आकाक्षाओं का हठात दमन करके क्या वह जी सकेगा। तन्हा और अकेला...... नहीं मां। ऐसा नहीं होगा.. ..... नहीं होगा।

तुम फिर भूल रही हो बेटी! मैंने पहले ही कह दिया है कि समाजिक सम्पर्क ही उ. का जीवन है। बिना उसके कोई बात सम्भव हो नहीं! लेकिन.. ......

लेकिन क्या? कुछ समझ नहीं आता कि तुम कहने क्या जा रहो हो? कइयों को देखा तो कुछ और बताते है और एक तुमको देखा न जाने क्या २ बोलती हो। जैसे तुम्हारे पास इच्छा नाम की कोई चीज़ भी नहीं, अभिलाषा नाम का कोई अनुभव नहीं। तुम्हारी बातें तो दर्शनिक ग्रन्थों के उदाहरण होंगे जिनसे निराशा अपने दो २ हाथ करके अरमानों का गला घोंटती है। नही। नहीं मेरा अभिप्राय ऐसा नही जिससे तुस निराश हो जाओ। पर समय पर संकेत करना मेरा कर्तव्य है मैं तो जानती हुं कि तुम्हारे दफ्तर में तुम्हें समझाने वाले कई होंगे मेरे अतिरक्त भी, परन्तु तुमने मेरी मशीनी ज़िन्दगी को समझना चाहा सो मैंने समझा दिया।

नही तो..... मैं तो......   ...
देखो मां तुम नाराज़ हो गई। मेरे कहने का कभी ऐसा मतलव नहीं था कि तुम नाराज़ हो जाऔ। मैं तुम्हारी ओर देखकर यह हेरानगी से अवश्य ही सोचती हूं कि तुम्हारे दफ्तर की असिस्टेन्ट मिसज़ मेहरा विधवा होकर भी कितनी सरस विचारों की है। लडकियों के साथ बोलती है, खेलती है, सिनेमा जाती है, अच्छे ड्रेसिज़ पहनती है, और ....

"बस! बस! हो चुका। क्या उसका यह मतलब है कि उसको वैधव्य छू तक नहो गया। नहीं ऐसी बात नहीं है, बल्कि स्वभाव बदलते बहुत कम देखे गये हैं। इसलिये मैं तो कहती हूं समाज ही मनुष्य का जीवन है। वह पहनती है और तुम देखते हो वह सिनेमा जाती है तो तुम्हें इसकी चिनता होती है। इसी पारस्परिक चिन्ता या लगाव को ही हम जीवन नाम देते हैं। यदि यही वात उसके कान में पड जाये तो बहुत हद तक सम्भव है कि वह यह सब छोडकर दूसरा रास्ता अपना ले! क्या है न यही बात।"

उसकी ही तरह माँ हमारे दफ्तर में मि० सरवाल है जो काफी ऐश के होते हुए भी औ काफी अनुभवी स्वभाव के होते हुए भी रसिक स्वभाव के हैं; उनकी कई बातें तो यथाँथ मे बहुत ही उच और ग्राहय होती हैं पर कई बातों में ऐसे अजीब हैं कि हम लड़कियों में एक मज़ाक सा बन गया है कहते हैं — सुन्दरता अपना मुल्य रखती है। अच्छी बस्तु कौन नहीं चाहता, अच्छी वस्तु से मनुष्य आदि काल से ही प्यार करता आया है। तो इसी बीच कहते हैं —"अपना हठ संयम और कठिन परिश्रम ही मनुष्य की सफलता की सीडी है।"

और इसी तरह . रोज...मेरे counter पर आ कर कहते हैं... ...चंचल वाकई तुम एक चंचल लहर हो, कितनी सुन्दर और अच्छी हो तुम । इसो बात का बाकी लड़कियों ने मज़ाक बना दिया है । एक दफा मैं दफ्तर में नही थी वह आये तो लड़कियों ने खूब बेवकूफ बनाया था, उन्हें कहा था.........

आप बैठिये अभी आती है मि० चंचल । पर जब मैं कुछ देर नहीं आई तो निराश होकर चले गये । दूसरे दिन सुबह ही आये और बोले— चंचल क्या बात है ! तुम ठीक हो ना ! कल तुम्हारी बहुत देर तक इन्तजार करता रहा । मैंने कहा "लेकिन आपने इतना कष्ट क्यों किया था मुझे तो काम था थोड़ा सा कल" फिर वह यकायक ही बोल पडे — "मि० चंचल ! मैं तुम्हारे फादर से मिलना चाहता हूं ।" "फिर जानती हो माँ । मैं दो क्षण के लिये मौन हो गई । क्या कहती कि मुझे तो स्वंय उनके दर्शन कभी नसीब नही हुए फिर तुम देखोगे तो कैसे । पर तभी सम्हल कर मैंने कहा sorry sir ! ऐसा हो नही सकता । क्योंकि मेरे फादर कहीं चले गये हैं फिर आये नहीं । फिर वह उसी शान्त की मुद्रा से बोले — तो तुम्हारी माँ तो होगी, मिला दोगी मुझे उनसे । मैंने कहा- मेरी माँ एक दफ्तर में काम करती है, और वहुत ही संकोच शील प्रकृति की है । इसलिये पहले उनसे पूछकर ही उतर दूंगी । पर अब तक भी मेरे में यह साहस नही आया कि तुमसे पूछ ही लेती । तब से कई दिन हो गये आज यों ही यह बातें भी चलीं ।"

यह कुछ सुनकर माँ कुछ सकते में आ गई परन्तु एक दम

सम्हल कर बोल पड़ो— अवश्य क्यों नहीं बेटो तुम्हारा कोई ओर बुर्ज़ग देखने को मिल जाये तो ईसमें हर्ज़ हो क्या ? अवश्य लाओ उनको कल अपने साथ ।

यधपि चंचल उस बूडे को एक बात भी पसन्द नहीं करती थी। परन्तु फिर भी न जाने क्या लचक और कैसा अकिषण था मि० सरबाल की बातों में कि वह लक्ष्यहीन सी खिचती जाती थी उनमें। वह रोज़ महज़ एक मज़ाक के मि० सरवाल कीं बातों में दाद देती कभो २ अपनां interest भो दर्शातो केवल मात्र दो एक बातें अपनी सुन्दरताको प्रशंसा सुनने के लिये। न जाने उसे क्या एक प्रकार का आनन्द सा प्रतीत होता। इन बातों में धोमी २ सी भदहोशो। कितने सुन्दर महल बनते उसके विचारों के जब भी वह अपनो तारोफ को बातं सुनती पर बाद में इन बातों का उसके हृदय पर कोई विशेष असर नहा पड़ता। सब वातें निमल सीं होकर रद्दी के खाने में गर्त होतो। दूसरे दिन इस कौतुहल से कि माँ को एक ऐसे आदमी से मिलाए गो जो अनुभवो है आदरनीय है परन्तु मानसिक उलझाव और प्राकृतिक कमज़ोरी से खाली नहो। वह रसिक है लड़कियों को सुन्दरता का और पुजारो है चंचल के उददेलित लावणय का। यधपि वह काफी वयस है परन्तु चंचल के लिये उसकी सुन्दरता को परखने की कोशिश पर कम अ कषक नहो।

वह एक दम तैयार हो गई दफ्तर जाने केलिये। अपनी नई ही चेतना और उत्सुकता से आते प्रोत। नई हा भावना थी उसके हृदय में एक पुरुष को अपनो माँ से मिलाने केलिये जो उस

की समझ में शायद उस पुरुष की सम्पर्क बढ़ाने की इच्छा ही थी और कुछ नही। अगर इस बात को उसके किशौर हृदय में कोई महत्व नही था, परन्तु उत्सुकता की उसमें कमी थी नही। दिन भर काम करती रही अपनी धुन में।

लैंच्च टाईम आया पर मि० सरवाल आया नही। फिर टाईम ओवर हुआ लेकिन वे दिखाई नही दिये। क्या बात है आखिर वह अपना पर्स सम्हाल कर उठ पड़ी उनके कमरे की ओर दरवाजे पर पहुच कर चिक से थोड़ा झांक कर देखा तो ठिठक गई महाशय किन्हीं दो एक सुन्दरियों से वार्तालाप में मस्त थी।

उसने अपनी घडी पर नजर डाली। पांच बजे थे। देर होने लगी थी उसकी माँ परेशान होती होगी विचार आते ही उस ने दरवाजे पर दस्तक दी। जव ब आया .....कम इन प्लीज़।

उसने चिक हटाकर कमरे में प्रवेश किया तो सर कुछ हैरान से और कुछ परेशान से हुये बोले— ओ तुम हो। क्या बात है कब से दिखाई नही दी।

चंचल को कुछ अजीब सा लगा खैर मि० मेहरा थी और देखकर कान खुजलाते हुये उसने जवाब दिया सर ! सोचा कई दिनों से आपको देखा नही सो आज घर ले जाने के लिये आई हूं।

"सच मैं तो भूल ही गया था। तो चलो।"

"चलिये सर"

आप से कल बात होगी।

उन उपस्थित महिलाओं को कुछ सकेंत करते हुये सर चंचल के साथ चल पडे।

माँ ने कई चीज़ें तेयार रखी हैं चंचल के दफ्तर के सर के लिये। जब से यहां आई थी, पहला मौका था उसको इस तरह किसी को तेयारी की आने में आज उसको उप बेटी का कोई मेह-मान आ रहा है जो हमेशा माँ को तन्हा मशीन कहते हैं। वह ऐसा स्वागत करेगी उसके मेहमान का कि चचल को कोई शिकायत नही रहेगी माँ के संकोच की। कमरा सजा हुआ था किताबों और सुन्दर सजाबट से। बीच में दिवार पर चित्र टंगे थे। मां को लगता था कि स्वंय सरसवती का आंगन यही होगा।

चंचल ले आई अपने मेहमान को दरवाज़ा खुला था। दोनों अन्दर आये। मेहमान को कुर्सी पर बिठा चंचल माँ के पास रसोई में चली गई।

"मां! हमारे वास आ गये हैं, चलो मिलो उनसे।
तुम अभी जाकर थोड़ी देर उनसे वात करो तो मैं चाय लेकर आती हुं।

चंचल बाहर जाने को मुडी तो 'सर' को दरवाजे की ओर बडते देख कर बोल पडी - अरे आप जा रहे है। सर मां तो अभी आई ही नही।

वह अन्दर भागी, ओ माँ वह तो चल दिये ।

पर 'सर' उसकी बातों को अनसुना करके दरवाजे की ओर मुडे मां आई तो आवाज दो - पकड़ो जाईयेगा पर।

चंचल की मां को देखते ही ऐसे दौडे कि कुछ पता ना चला ।

कहां चले गये ।

यह मब देखकर चंचल हेरान ठगो सी माँ से पूछ बैठी—यह सब क्या हुआ मां ।

मां खडी मूर्तवित सी उस रास्ते को खोजती सो जहां से अभी २ 'सर' चले गये थे, धोमे से बोलो बैटा वही हुआ जो होना था । यह कोई ओर नही स्वंय तुम्हारे पिता थे ।
" मेरे पिता जी थे ! चंचल चिल्लाई और सिर थाम कर वहीं बैठ गई, धरतो घूम रही थी ।